आर्य्यकीर्ति।

प्रथमखण्ड।

कुम्भ।

राजस्थान अर्थात् राजपूताना की मिवार (मेवाड़) भूमि निःसन्देह सच्चे वीरों की जन्मभूमि है। वहां एक से एक वीर पुरूष उत्पन्न होते रहे हैं। उन में से राणा कुम्भ भी एक यथार्थ वीर धर्म रक्षक पुरुष हो गए हैं शत्रु के राज्य में किसी न किसी युक्ति से विजयपताका आरोपित कर देना ही प्रकृति वीरता का लक्षण नहीं है। देश काल पात्र का विचार किए बिना जहां देखो वहीं तलवार चला देना भी प्राकृतिक वीरता का परिचय नहीं है। न्याय और धर्म को तिलांजली दे के प्रबल शत्रु की स्वाधीनता हरण कर लेना भी वास्तविक वीर धर्म का चिन्ह नहीं है। जो बली व्यक्ति किसी बलिष्ठ समुदाय का सम्भारक बन के गुप्त रीति से शस्त्र हीन विपक्षियों का संहार करता है, असमय में अतर्कित भाव से अत्यंत अत्याचार के द्वारा सर्वत्र भय और आतंक का राज्य विस्तार करने में उद्यत होता है, न्याय के गम्भीर उपदेशों पर ध्यान न देके चारों ओर की धरती मनुष्यों के रक्त से प्लावित कर देता है उसे सज्जन गण सच्चा वीर नहीं बरंच मूर्ख और क्रूर कहते हैं। प्रकृतिवीर पुरुष कभी ऐसी नीचता नहीं दिखाते। उन का हृदय सदा उच्च भाव से पूर्ण रहता है। वे जैसे संग्रामक्षेत्र में वीरता का परिचय देते हैं वैसे ही अन्य समय में कोमलता का बर्ताव कर के सब लोगों के प्रीतिपात्र बने रहते हैं। वह कभी अपनी साधना से विचलित नहीं होते न अपने महत्व को हीनता के पंक से कलंकित होने देते हैं। घोर विघ्न और विपत्ति आ पड़ने पर भी वे अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिए कभी न्याय एवं धर्म का अपमान नहीं करते। सच्चे और सदा धीरता के साथ अपने शुद्ध धर्म की रक्षा करने में तत्पर रहते हैं। मेवाड़ के राजपुत्रगण ऐसे ही वीर थे। जैसी वीरता और मनस्विता वे दिखला गए हैं वैसी उग्र स्वभाव के पठान, जयलोलुप मुगल और राज्यलुब्ध अंगरेज सेनापति

कदापि नहीं दिखा सके। शहाबुद्दीनगोरी यदि छल न करता तो द्रषद्वती नदी के तट पर क्षत्रियों के शोणित सागर में भारत का सौभाग्य सूर्य कभी न डूबता। अकबर यदि अर्धरात्रि के समय गुप्त रीति से पराक्रमी जयमल्ल की हत्या न करते तो चितौर पर मुगलों का अधिकार हो जाना सहज न था जिस के कारण सहस्रों कुलस्त्रियों को अग्निकुंड में प्रविष्ट हो के प्राण देना पड़ा। लार्डक्लाइव यदि मीरजाफ़र और जगतसेठ आदि को मिला न लेते तो प्लासी के युद्ध में समस्त बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा एकाएकी ब्रिटिश कम्पनी के आधीन न हो जाता। कप्तान निकलसन और कप्तान लारेंस षडयंत्र रचना न करते तो महाराज रणजीतसिंह का राज्य ब्रिटिश जाति के हस्तगत हो जाना हंसी खेल न था। हिन्दुस्तान में बहुत लोगों ने इसी प्रकार अपना वीरत्व कलुषित किया है पर राजपुत्रों की वीरता पर कभी ऐसे कलंक की छाया भी नहीं पड़ी। क्षत्रिय वीरों ने सदा अकलंकित भाव से अपने अतुलनीय वीरत्व का संरक्षण किया है।

कृतज्ञता, आत्म सन्मान और विश्वस्तता राजपुत्र वीरों के धर्म भाव का मूल हैं। किसी राजपुत्र से पूछो कि पृथ्वी पर सब से बड़ा पापी कौन होता है? तो वह छुटते ही यही उत्तर देगा कि—गुणचोर अर्थात् कृतघ्न और सतचोर अर्थात् अविश्वस्त! राजपुत्रों का सिद्धांत है कि सब से अधिक नर्क यातना के भागी यही दो प्रकार के लोग होते हैं। हम मेवार के एक वीर पुरुष का पवित्र चरित्र प्रकाशित करते हैं जिस के द्वारा विदित हो जायगा कि वीरता की भयानक मूर्ति अथच माधुर्य की कमनीय कांति क्योंकर एक ही आधार पर अवस्थिति करती हैं।

राना कुम्भ १४१९ ईस्वी में सिंहासन पर बैठे थे। साहस, पराक्रम और शासन दक्षता में इन्हों ने बड़ी भारी सत्कीर्ति लाभ की थी और अनुमान पचास वर्ष राज्य कर के बहुत से सदनुष्ठान पूर्ण किए थे। पर बहुत दिन तक शांति सुख नहीं भोग कर सके क्योंकि देश की स्वाधीनता के रक्षणार्थ प्रबल शत्रु के साथ युद्ध में प्रवृत्त रहे। खिलजी बादशाहों का पराक्रम न्यून हो जाने के कारण कई मुसलमान अधिपतियों ने दिल्ली की आधीनता छोड़ के स्वाधीनता ग्रहण कर ली थी। उस में मालव और गुजरात के शासनकर्त्ता

सर्व प्रधान थे। जिन दिनों राना महोदय गद्दी पर बैठे थे उन दिनों उपर्युक्त दोनों अधिपतियों का बड़ा प्राबल्य था। इन दोनों ने १४४० ई० में बहुत सी सेना लेकर मेवाड़ पर आक्रमण किया और राना कुम्भ ने एक लक्ष योद्धा तथा चौदह सौ हाथी लेकर बैरियों का सामना किया। मिवार के प्रान्त भाग वाले मालव राज्य के मैदान में घोर तर युद्ध हुवा। उस में विपक्षियों की पराजय हुई और मालव का अधिपति बन्दी हो गया और मेवाड़ की स्वाधीनता अटल बनी रही उस अवसर पर राना जी अपने पवित्र चरित्र का परिचय दिया। पराजितशत्रु पर असज्जनता प्रकाश न करके वीर धर्म का अनुसरण किया। शत्रु की प्रतिष्ठानष्ट न की बरंच उसे मुक्त करके और बहुत सी धन सम्पत्ति के देके उस राज्य में भेज दिया। वीर पुरुषों का चरित्र ऐसे, महत्व एवं उदारता से पूरित होता है!

जिस समय सिक्खों के सेनापति शेर सिंह का पराभव हुवा था और सिक्ख सरदारों ने अंगरेज सेनापति को अपनी तलवार देकर कहा था कि—अंगरेजों के अत्याचार से व्यथित होने के कारण हम लोग युद्ध मे प्रवृत्त हुए थे और अपने देश की रक्षा के लिए यथासाध्य युद्ध किया भी हम ने कभी वीर धर्म की अवमानना नहीं की पर अब हमारी सेना मर कट गई और शस्त्र बेकाम हो गए हैं इस से नाना अभाव वशत: हम आधीनता स्वीकार करते हैं हम ने जो कुछ किया है उस के निमित्त लज्जित नहीं हैं बरंच सामर्थ्य होने पर फिर भी वैसाही करेंगे!—उस समय अंगरेजों के दलपति ने इन पराजित तेजस्वी वीरों की सन्मान रक्षा नहीं की थी बरंच ब्रिटिशराजप्रतिनिधि ने पंजाब की स्वाधीनता नष्ट करदी थी और गुजराट के युद्धक्षेत्र में पड़े हुए घायल योद्धाओं पर भी दया न प्रकाश की थी। उन्नीसवीं शताब्दी के सभ्यताश्रोत में वीरत्व की महिमा डूबी थी पर पंद्रहवीं शताब्दी में मेवाड़ ने अपनी सच्ची वीरता संरक्षित रक्खी थी! राजपुत्र वीर का यह असामान्य चरित्र पृथिवी के समस्त वीरों को अनुसरण करने के योग्य है।

रायमल्ल ।

मिवार के अधिपति रायमल्ल जी का चरित्र देवभाव से पूर्ण है जिस के कारण आज तक राजस्थान का इतिहास उज्जल हो रहा है यदि स्वार्थ त्याग का कहीं कुछ महत उद्देश्य है, वंश के पवित्रता के संरक्षणार्थ यदि स्थिर प्रतिज्ञा कोई वस्तु है, यदि हृदय की तेजस्विता से सच्चे बीरत्व का परिचय होता है तो यह सब गुण रायमल्ल में अवश्य आश्रय ग्रहण किए हुए थे। वह निस्संदेह स्थिर प्रतिज्ञा और तेजस्विता का जीवित उदाहरण दिखा गए हैं। दिमस्थिनिस * चाहे अद्वितीय सुवक्ता न भी माने जायं बाल्मीकि जी को चाहे कोई अद्वितीय कवि न भी कहे, हाडवर्ड के ‡ अद्वितीय परोपकारी होने में चाहे कोई संदेह भी करे पर रायमल्ल की अद्वितीय तेजस्विता में संशय करने का स्थल किसी को न मिलेगा ! उन के समान लोकातीत महाप्राणता का प्रत्यक्ष उदाहरण कोई भी नहीं दिखा सका। और उन के सहश पाप के राज्य में पुण्य का प्रकाश करके अपने

---

* दिमस्थिनीस यूनान का सब से बड़ा सुवक्ता था। उस का पिता एथेंस नगर में तलवारों का व्यवसाय करता था। ईसा से ३८० वर्ष पहिले दिमस्थिनीस का जन्म हुआ था वह बाल्यावस्था ही में पितृहीन हो जाने के कारण भली भांति पढ़ लिख न सका था पर सत्रह वर्ष की अवस्था में वक्तृता देना सीखकर अंत में अद्वितीय वाग्मी हो गया था।

‡ जान हौ अर्ड १७२६ ई० में इंग्लिस्तान के हाक्नेनामक नगर में उत्पन्न हुए थे १७५६ ई० में लिसबन नगर की भूकम्प के कारण परिवर्तित दशा देखने को गए थे मार्ग में दैवयोग से फ्रांस देश के कारागार में भेज दिए गए। वहां अन्य बंदियों की भांति इन्हें भी बहुत यंत्रणा भोगनी पड़ी तब से कारागार की दूषित प्रणाली के संशोधन में दृढ़ प्रतिज्ञा करली और छूट कर अपने देश में आने पर इस का आंदोलन करने लगे। यूरोप के प्रधान २ नगरों के कैदियों की दशा जांचने में ऐसे दत्त चित्त हुए कि संक्रामक रोगवालों के पास जाने में भी त्रुटि न करते थे वरंच इसी कारण एक रोगी का रोग लग जाने से १७९० ई० में जगत से सिधार गए।

महत्व का परिचय देने में भी कोई समर्थ नहीं हुवा जगत के इतिहास में आज तक और किसी स्थान पर ऐसा उदाहरण देखने में नहीं आया। रोम देश के ब्रुतस ने * अपराधी पुत्र को घातक के हाथ में सौंप कर संसार के सन्मुख स्वार्थ त्याग और न्याय का महान भाव दिखाया था सही पर रायमल्ल ने अपराधी पुत्र के प्राणहंता को पुरस्कृत करके उस से भी अधिकतर उच्च भाव का परिचय दिया है।

चार सौ वर्ष से आगे की बात है कि वीरभूमि राजपुताना की एक परम सुंदरी अप्राप्त वयस्का घोड़े पर चढ़ी हुई कहीं जा रही थी। उस का भेष, योद्धाओं का सा था और निर्भयता के साथ घोड़े को सरपट हांक रही थी उस की भीषण एवं मधुर मूर्ति चारों ओर एक अपूर्व प्रभाव विकाश कर रही थी। इतने में एक क्षत्रिय युवक ने उसे दूर से देखा। वह भी युद्धवेश धारण किए था और अश्वारूढ़ था। दोनों ओर की सुंदरता और भीषणता का सम्मिलन हुवा। युवक व्यक्ति उस की अनुपम शोभा और अपूर्व अश्वचालन कुशलता पर मोहित हो गया। तथा उस रूपराशि ने भी इस के हृदय में एक अकथनीय आशा और निराशा उत्पन्न कर दी। युवक नेत्र बाण से घायल हुवा। पाठक वर्ग! यह उपन्यास की भूमिका नहीं है और न अपूर्व कल्पना की कहानी है। यह इतिहास की कथा है। यह युवक मेवाड़ के क्षत्रियकुलभूषण महाराज रायमल्ल के कनिष्ट पुत्र जयमल्ल थे और वह तड़ित वरणी अश्वारोही टोडा † के अधिपति राव सुरतन की कन्या ताराबाई

* ब्रुतस रोम का प्रधान मैजिस्ट्रेट था। रोम में साधारणतंत्र स्थापित होने पर ब्रुतस और कलेतिनस प्रधान मैजिस्ट्रेट नियत्त हुए थे। इन की उपाधि कंसक थी। उस समय साधारणतंत्र के विरुद्ध बहुतेरों ने षडयंत्र रचना की थी उन में ब्रुतस के दो पुत्र और कलेतिनस के तीन भतीजे भी थे उन का विचार प्रधान मैजिस्ट्रेट के सन्मुख हुवा। कलेतिनस ने प्रीति के मारे भतीजों को थोड़ा ही दंड देना चाहा पर ब्रुतसने अपने पुत्रों को वधदंड की आज्ञा देके आपक्ष-पातिता का परिचय दिया था।

† इस पुस्तक में टोडा लिखा है परंतु 'इतिहास राजस्थान' में रामनाथ रत्नू ने थोड़ा लिखा है। यथा—

थीं; बाप्पारावल के वंशधर आज इस शुद्ध वेशधारिणी लावण्यमयी के शोभा-समुद्र में मग्न हो गए।

महाराज रायमल्ल के पुत्र ने ताराबाई के पाणिग्रहण की अभिलाषा प्रगट की पर राव सुरतन ने सहसा उन की आशा को पूर्ण न किया। वीर-भूमि राजस्थान बंगाल देश नहीं है! राजपूत बीर बंगालियों की नाईं वर नहीं ढूंढ़ते! बंगाली लोग धनवान का अकर्मण्य पुत्र अथवा बी॰ ए॰ एम॰ ए॰ उपाधिधारी विलासी युवक देखते ही गीलगीला हो जाते हैं पर राजपुत्र सुयोग्य वर देखे बिना कन्यादान नहीं करते! लिल्ला नामक एक दुरन्त पठान ने राव सुरतन को देश से निकाल कर टोडा राज्य पर अधिकार कर लिया था। सुरतन वहां से निकलकर कन्यारत्न के सहित मिवार राज्य के अंतर्गत बेदनोर में आ बसे थे उन की प्रतिज्ञा थी कि जो कोई अपने बाहु बल से टोडा राज्य को ले लेगा उसी के साथ विधाता की अपूर्व सृष्टिरत्न ताराबाई का व्याह करेंगे! यह प्रतिज्ञा राजपुत्रों ही के योग्य थी! जो लोग इस वाक्य को मानते हैं कि 'वीर भोग्या वसुन्धरा' उन्हीं के मुख से ऐसी प्रतिज्ञा शोभा देती है। जयमल्ल ने राव सुरतन की इच्छा पूर्ण करने के मानस से टोडा पर चढ़ाई की और पठान के साथ घोर युद्ध भी किया पर अंत में हार के भाग आए तथापि राजपूतकलंक लांछित न हुए शत्रु के सम्मुख युद्धस्थल में देह त्याग करना अपना करतव्य नहीं समझा उन के हृदय में तारा बाई की मोहनी मूर्ति जाग रही थी वह पराजित हो कर

"तीसरे जयमल्ल जी ने थोड़ा के राव सुरतान जी की पुत्री से विवाह करना चाहा था सुरतान जी का राज्य पठानों ने छीन लिया था इस लिये उन्होंने जयमल्ल जी को थोड़ा पीछा दिलाने पर अपनी पुत्री व्याहने का वचन दे दिया था; परन्तु जयमल जी ने थोड़ा दिलाने और विवाह करने से पहिले ही सुरतान जी की पुत्री से मिलना चाहा तो क्रोधित सुरतान जी ने जयमल जी का शिर काट लिया रायमल जी को जब लोगों ने जयमल्ल जी का वैर लेने के लिये कहा तो यही उत्तर दिया कि एक क्षत्री का और विशेष कर के एक गिरे हुये क्षत्री का इस प्रकार अनादर करने वाले का अवश्य शिर कटना चाहिये।"

प्रसन्न वदन से बेदनोर आए और अवैध रीति से कलावती को लेने का उद्योग किया। यह अपमान राव सुरतन न सहन करसके इस से जयमल्ल का बध कर के अपने वंश की प्रतिष्ठा बचाई। इस प्रकार राजपुत्र का खङ्ग राजपुत्र कलंक के रक्त से रंजित हुवा।

यह समाचार मिवार में पहुंचा और घर२ में इसी की चर्चा होने लगी। यह भयानक सम्वाद महाराज को कौन सुनावेगा? राव सुरतन ने बाप्पा राव के वंशज की हत्या की है उन्हें कौन बचावेगा? सब ने यही निश्चय कर लिया कि अब सुरतन नहीं बचते। रायमल्ल के ज्येष्ठ पुत्र अपने छोटे भाई के पराक्रम बशत: अज्ञात बास करते थे दूसरा पुत्र उद्दतता के कारण पिता की आज्ञा से निर्वासित हो गया था केवल जयमल्ल ही पिता का हृदयरंजन था आज वह भी परलोकवासी हो गया हाय यह दु:ख महाराज कैसे सहेंगे? मिवाड़ के राजपूतगण इसी विचार में अधीर होरहे थे। होते २ यह चर्चा महाराज रायमल्ल के कान तक भी पहुंची। रायमल्ल ने धैर्य के साथ सब वृत्तांत सुना अकसमात उन की भौंहैं चढ़ गईं और आंखें लाल हो गईं। प्राणप्रिय पुत्र की मृत्यु से वे कातर नहीं हुए बरंच गंभीर स्वर से बोले—जिस कुलांगार पुत्र ने पिता का सम्मान नष्ट करने का उद्योग किया था उस की ऐसी ही दशा होनी उचित थी! सुरतन ने उसे बध कर के क्षत्रियोचित कर्तव्य का पालन किया है।—यह कह कर महाराज ने राव सुरतन को राजपुत्र कुलोचित पुरस्कार की भांति बेदनोर राज्य समर्पित कर दिया। सच्चे बीरों का चरित्र ऐसे ही उच्च भावों से पूर्ण होता है। प्रकृत बीर ऐसी ही महाप्राणता और तेजस्विता से अलंकृत होते हैं*। आज इतने

* इस प्रकार के और एक उदाहरण सुनिए। पूर्वकाल में हयहोवंश नामक क्षत्री सारन, आरा और गाजीपुर आदि देशों के अधिपति थे और आजकल भी उन के वंशवाले ज़िला बलिया में रहते हैं। इन लोगों की सभी बात उत्तमोत्तम थीं। अन्य देशियों ने भी इन लोगों की बड़ी बड़ाई लिखी है। इन में एक महाराज रामदेव हुए हैं। इन को ७० रानियां थीं और दो सौ संतावन लड़के थे। और इन की राजधानी भलुसड़ थी जो आजकल ज़िला बलिया में एक गांव है

बड़े भारतवर्ष में सच्चे कवि और ऐतिहासिक कै जने हैं जो इस महाप्रा-
णता और तेजस्विता का उचित सन्मान कर सकें ? क्या अब चारणगण इस

और वहां गढ़ का निशान भी है। यह बड़े न्यायी बीर थे संवत ११७९ बिक्र-
माब्द में राजा हुए थे २९ वर्ष तक राज किए थे १२०४ संवत में काशी में
तन त्यागे।

इन के राज के पहले ही इन के पुरुषों ने चेरो आदि को विजय किया था और अहीर थारू आदि कई एक जातियों को इन को जीतने की इच्छा थी अतएव यह भलुसड़ में अपनी राजधानी बनाये। यद्यपि इन की बिजय तो हुई परंतु इन के ४५ लड़के पहले ही लड़ाई में बीरगति को प्राप्त हुए। पैतालीसों बड़े नामी बीर थे उन लोगों का नाम नीचे लिखा जाता है। बीरसिंह १ आशकरणसिंह २ गिरिधारीसिंह ३ रामप्रकाशसिंह ४ रामेश्वरनाथसिंह ५ बैरीशालसिंह ६ दलपतिसिंह ७ जसवंतसिंह ८ उदयसिंह ९ दीपसिंह १० रत्नसिंह ११ कुलदीपसिंह १२ गंभीरसिंह १३ किशोरसिंह १४ बलवंतसिंह १५ भगवंतसिंह १६ बाघसिंह १७ सूर्य्यनाथसिंह १८ हरिसिंह १९ सावंतसिंह २० गोपालसिंह २१ कुशलसिंह २२ लालसिंह २३ रघुनाथसिंह २४ परमेश्वरसिंह २५ विश्वेश्वरसिंह २६ रणमल्लसिंह २७ सूरसिंह २८ रूपसिंह २९ शार्दूलसिंह ३० विष्णुसिंह ३१ भाउसिंह ३२ जयसिंह ३३ ईश्वरीसिंह ३४ रणजीतसिंह ३५ बलदेवसिंह ३६ दुर्जनशालसिंह ३७ रणधीरसिंह ३८ जयमंगलसिंह ३९ कीर्तिसिंह ४० लोकेन्द्रसिंह ४१ बुधसिंह ४२ अनिरुद्धसिंह ४३ अजीतसिंह ४४ मुकुंदसिंह ४५।

इन लोगों के बीरगति प्राप्त होने पर लोकेन्द्रनाथसिंह सेनापति हुए थे। हयहोवंशी लोग जो किसी शत्रु को जीतते थे तो उस समय सैन्य पर विशेष आज्ञा देते थे कि जिस में कोई सिपाह किसी स्त्री पर बलातकार न करें और न उन प्रजाओं को दुख दें परंतु सेनापति लोकेन्द्रनाथसिंह ने एक अत्यंत रूपवती बारी की लड़की को अपनी दासी बनाने के निमित्त लेआये। और वह रोती कलपती बरबस आई। और उस के पिता ने महाराज रामदेव से आकर इस अनर्थ का समाचार सुनाया। महाराज अपने प्रिय पुत्र को अपने हाथ से प्राणदंड दे कर अपनी कीर्ति को बढ़ाया। और बारी को बहुत सा पुरस्कार दिया। अनुवादक—

प्रकार के अतीत गौरव के गीत गा कर सैकड़ों वर्ष से सोए हुए भारत को न जगावेंगे ?

वीरबालक और वीररमणी ।

१५६८ ई० में महाबली मुग़ल सम्राट अकबर ने जिस समय चित्तौर पर चढ़ाई की और स्वाधीनता प्रिय आर्यवीरगण मातृभूमि की रक्षा के अर्थ रणभूमि में सदा के लिए सो गए। जिस समय राजपुत्रकुलतिलक जयमल्ल शत्रु के द्वारा निहत हो गए अथच सोलह वर्ष की अवस्था वाले पुत्त महाशय ने असीम उत्साह के साथ स्वाधीनता की जयध्वजा स्थापित की उसी समय चित्तौर की तीन वीरांगनाओं ने भी स्वदेश के निमित्त अपने प्राण उत्सर्ग किए थे। कोमल देह पर कठिन कवच धारण कर के कोमल हाथ में कठोर अस्त्र ले के मुग़ल सेना का गतिरोध करने में उद्यत हुई थीं। यह ललना शत्रु पीड़ित राजस्थान की प्रकृत वीरांगना, स्वाधीनता की ज्वलंत मूर्ति एवं आत्मत्याग का अद्वितीय दृष्टांत हो गई हैं।

पराक्रमशाली जयमल्ल स्वर्ग को सिधार गए हैं। अन्याय युद्ध में पुरुष सिंहगण अनंत निद्रा के क्रोड़ में जा पड़े हैं वीरभूमि वीरों से शून्य होगई है। चित्तौर की रक्षा कौन करेगा ? दुर्दांत मुग़ल द्वार पर उपस्थित हैं उन्हें कौन रोकेगा ? स्वाधीनता की लीलाभूमि परतंत्रता की शृङ्खला में बद्ध हुआ चाहती है उस दुर्भेद्य निगड़ को कौन भग्न करेगा ? हाय ! आज वीरभूमि हताश एवं हतोद्यम हो रही है ! ऐसे अवसर पर एक वीर बालक 'स्वर्गादपि गरीयसी' मातृभूमि के ऊपर अपने प्राण निछावर करने को प्रस्तुत हुआ। जयमल्ल सदा के लिए राजपुताना से विदा हो गए हैं उन के बिना चित्तौर सूना देख पड़ता है पर इस शून्य स्थान को पुत्त ने पूर्ण कर दिया ! पुत्त की अवस्था केवल सोलह वर्ष की थी किन्तु साहस विक्रम और क्षमता बहुत बड़ी थी। उन्हों ने माता पिता से बिदा मांगी कर्म देवी ने आश्वस्त हृदय से प्रियतम पुत्र को युद्धस्थल में जाने की आज्ञा दे दी। फिर वह अपनी प्रिया के निकट गए कमलावती ने भी प्रसन्न चित्त से प्राणनाथ को रणभूमि में जाने के लिए कह दिया। उन की भगिनी कर्णवती ने भी जन्म-

भूमि की रक्षा के निमित्त स्नेहपात्र सहोदर को उत्तेजना दी। षोडश वर्षीय बालक, चित्तौर का अद्वितीय वीरजन्म भर के लिए विदा हो कर असीम उत्साह पूर्वक पवित्र कार्य साधन के हेतु पवित्र भूमि में उपस्थित हुवा। मुगलों का दल दो भाग में विभक्त था एक भाग के सेनापति स्वयं अकबर थे और दूसरे के एक सुचतुर योद्धा थे। द्वितीय दल के साथ पुत्त का घोरतर युद्ध आरंभ हुवा बादशाह ने दूसरी ओर से बाधा देने का उद्योग किया।

दो पहर के समय अकबर की सेना सहसा व्यतिव्यस्त होने लगी वह पुत्त की ओर बढ़ी चली आती थी कि एकाएकी उस की गति अवरुद्ध हो गई। सन्मुख संकीर्ण पर्वतमार्ग था उस के शिरोभाग में दो वृक्ष थे उन्हीं के पीछे से गोली पर गोली आ आ कर मुग़ल के दल को छिन्न भिन्न कर चलीं। योद्धा चकित हो के ठहर रहे। और गोलियों की अविरल वर्षा के के द्वारा धराशायी होने लगे। अकबर ने आश्चर्यित हो के देखा तो तीन वीर बाला पहाड़ी रास्ते में डटी हुई थीं उन में से एक तो वर्षीय सी थी और दो अपूर्ण यौवना। तीनों घोड़े पर चढ़ी, अभेद्य कवच पहिने बड़ी निपुणता के साथ शस्त्र संचालन कर रहीं थीं। उन की मधुरता और भयानकता का सम्मिलन देख कर सम्राट का हृदय विचलित हो गया। इन स्त्रियों के द्वारा बहुत सी सेना नष्ट हो गई थी यह देख के अकबर का मुंह लटक गया।

इधर तुमुल युद्ध होने लगा। कर्म देवी, कमलावती और कर्णवती भी अपना अतुल पराक्रम प्रकाशित करने लगीं। षोड़शवर्षीय पुत्त, स्नेह का एकमात्र अवलम्बन, प्रबल शत्रु के साथ अकेला युद्ध करे यह कर्म देवी से कब देखा जाता था? प्राणप्रियतम, पवित्र प्रेम के अद्वितीय आधार एकाकी शत्रुओं के शस्त्राघात से क्षत विक्षत हो अकेले जन्मभूमि के लिए प्राणत्याग करें यह कमलावती से कैसे सहन किया जाता था? प्रीति का असामान्य, पात्र, सगा भाई, पवित्र कार्य के लिए देह छोड़े दुरन्त शत्रु देश की स्वाधीनता हरण करे यह कर्णवती से क्यों कर सहारा जाता था? पुत्त ने मुग़लों के एक दल पर आक्रमण किया है अकबर दूसरा दल उन के विरुद्ध लिए जा रहे हैं कर्मदेवी कमलावती और कर्णवती ने हठात् उस की गति रोक दी तुच्छ प्राणों की ममता छोड़ पवित्र देश की स्वाधीनता रक्षा के अर्थ शत्रुओं का व्यूह भेद करने में कटिबद्ध हो गईं।

एक ओर षोड़शवर्षीय पुत्त और दूसरी ओर उन की वर्षीयसी माता, तथा अपूर्ण वयस्का प्रणयिनी एवं सहोदरा अग्नि स्फुलिंग की भांति दिल्ली-पति के क्षारखार करने में उद्यत होगईं। इस अपूर्व दृश्य की अनंत महिमा आज कौन समझ सकता है? भारत आज निर्जीव हो रहा है, यहां वीर कोई रहा नहीं, जातीय जीवन यहां से जाता रहा है। अब यहां उक्त वीर बालक अथच वीररमणियों के पवित्र वीरत्व का पूजन कौन करेगा?

क्षण २ पर तीनों देवियां शत्रु सेना का विनाश करनेलगीं। दो पहर से सन्ध्या तक अविचल रूप से घोर संग्राम हुवा। विना विश्राम और विराम के दो पहर से सामतक वीर्यवती वीरांगनाओं ने प्रवल शत्रु दल को आगे न बढ़ने दिया। अनेक योद्धाओं को धरती माता का बलि पशु बना दिया अकबर इस वीरता पर मोहित हो गए। वीरत्व का यथोचित आदर करने के लिए उन का मन उत्कंठित हो गया। आज्ञा प्रचार कर दी कि जो इन तीनों जर्जर औरतों को जिन्दा पकड़ लावेगा उसे बहुत सा इनाम दिया जावेगा—पर सब लोग युद्ध में मत्त हो रहे थे इस आदेश पर कौन ध्यान देता था? मुगल लोग ज्ञान शून्य हो कर युद्ध में संलग्न हुए और तीनों वीर बाला असीम साहस के साथ सामना करने में प्रवृत्त हो गईं। सहसा कर्णवती का शरीर शिथिल होगया। वह वृन्तच्युत पुष्प की नाईं भूमि पर गिर पड़ीं पर प्राणप्यारी पुत्री की दशा देख कर कर्मदेवी कातर नहीं हुईं। धीरता के साथ शत्रुओं पर गोलियां बरसाती रहीं। तब तक कमलावती की बाईं भुजा में एक गोली आ लगी। किंतु उन्हों ने उस पर ध्यान न दिया शत्रु संहार में लगी ही रहीं। मुगलों ने उन्मत्त हो कर शस्त्र वर्षा आरम्भ की। जिस समय कमलावती और कर्मदेवी भूतलशायिनी हुईं उसी समय वीरवर पुत्त शत्रु सेना को पराभव दे के गिरिपथ के निकट आए वहां उन की पूजनीया प्रियतमा पत्नी और प्राणोपमाभगिनी धरती पर पड़ी तड़प रही थीं। यह दृश्य देख के फिर भी बहुत से विपक्षियों का संहार किया। इधर कमलावती और कर्मदेवी का बोल बंद हो गया उन्हें पुत्त ने गोद में उठा लिया कमलावती ने धीर भाव से प्राणाधिक की ओर देखा और उन्हीं के बाहु मूल में मस्तक रख कर चिर निद्रा को प्राप्त हो

गई। कर्मदेवी ने प्यारे पुत्र को फिर युद्ध करने का आदेश दिया। और वैकुण्ठ धाम को पधार गईं। पुत्त कुछ काल तक चिन्तित रहे फिर भीषण शब्द से हर २ करते हुए शत्रु सेना में प्रविष्ट हुए और विलम्ब तक युद्ध करके बहु संख्यक बैरियों को काल का कलेवा बना के धरती माता की गोद में चिरकाल के लिए शयन किया। उन की देह तदीय प्रियतमा के सहित एक चिता पर अग्निदेव को समर्पित की गई। तथा कर्मदेवी एवं कर्णावती का शरीर दूसरी चिता पर शयन कराया गया। सभों ने अमरलोक को प्रस्थान किया और उन की अक्षय कीर्ति भूलोक में बनी रही।

वीरधात्री।

राजपुत्रकुल गौरव महापराक्रमी संग्रामसिंह वीरगति को प्राप्त होगए हैं। जो साहस में अविचल और वीरत्व में अतुलनीय थे। जिन के शरीर को अस्सी शस्त्राघात के चिन्हों ने भूषित कर रक्खा था। जिन्हों ने विधर्मी यवनों के द्वारा हस्त पद से रहित हो जाने पर भी अपनी वीरता का गौरव संरक्षित रक्खा था। उन का शरीर पंचतत्व में मिश्रित हो गया है। वैरियों के चक्रांत जाल में पड़कर पुरुषसिंह अनंत निद्रा लाभ कर चुके हैं। मिवार का अत्युज्ज्वल सूर्य चिरकाल के लिए अस्त हो गया है। उस की शिशु संतति आज शत्रु के हाथ में जा पड़ी है। छः वर्ष का भोला भाला बच्चा निश्चिंत रूप से दुग्ध पान कर रहा है निश्चिंत भाव से निद्रा का सुख ले रहा है। उस को इस की क्या खबर है कि निर्दयी शत्रु मेरे प्रान लेने की चेष्ठा कर रहे हैं। इधर दासी पुत्र बनवीर * मेवाड़ राज्य के लोभ से उस दूध के फोहे की हत्या करने में उद्यत है इस घोर विपत्ति से आज पराक्रांत संग्रामसिंह के दुधपिए बालक की रक्षा कौन करेगा? बाप्पा राव के पवित्र वंश को निर्मूल कर देने का षड़यंत्र हो रहा है आज इस कुल का उद्धार

* बनवीर संग्राम सिंह के भाई पृथ्वीराज का पुत्र था। और एक दासी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। उदय सिंह की वयः प्राप्ति तक इसे राज्य का अधिकार दिया गया था पर इस ने बालक उदय सिंह का बध कर के सदा राज्य करना चाहा था।

कौन करेगा ? एक निस्सहाय रमणी इस महाविपद से उदय सिंह को बचाने के लिए अग्रसर हुई है ! अनाथ बालक आज एक तेजवती धात्री के आश्रय में जीवन रक्षा करता है। पन्नाधात्री आज अश्रुत पूर्व स्वार्थ त्याग के बल से बाप्पा राव के वंशधर को जीवित रखने में उद्यत है।

पन्ना ने इस कठिनतम कार्य का किस प्रकार से साधन किया ? किस रीति से पितृहीन शिशु का शरीर अक्षत रहा ? इसका वृत्तांत सुनने से हृदय अवसन्न हो जाता है। रात्रि के समय उदयसिंह खा पी के सो रहे हैं इतने में एक नाऊ * ने आ के पन्ना दाई को समाचार दिया कि बनबीर उदय

---

*आर्य्यकीर्ति के रचयिता। श्रीयुत बाबू रजनीकान्त गुप्त ने लिखा है। 'राजस्थान में इस जाति का बारी नाम प्रसिद्ध है। राजपूतों के जूठा उठाना इस जाति का प्रधान काम है।' पर हम लोग बारी नाऊ को दो जाति जानते हैं। नाऊ को नाई, ओस्ता, ठाकुर आदि कहते हैं नाऊ का काम हजामत बनाना है। बारी वह लोग कहलाते हैं जो पत्तल बनाते और ब्राह्मण क्षत्रियों की जूठन उठाते हैं।'नाऊ बारी भाट नट राम निछवारि पाय'। मानसरामायण में। और 'नाऊ बारी भाट पुरोहित चारिउ नेगी लए बुलाय' आल्हा में देखो।

कईलोगों ने पन्ना को बारिन लिखा है पर 'इतिहास—राजस्थान'में चारण रामनाथरत्नू ने पन्ना को नायन लिखा है उन का लेख यह है। 'यद्यपि सब सरदार विक्रमादित्य जी से अप्रसन्न थे तो भी उन में से यह कोई भी नहीं चाहता था कि चित्तौड़ की गद्दी पर कोई खवासनिया बैठ जांय क्योंकि ऐसा होने से तो शीशोदियों के शुद्ध वंश को बड़ा ही कलङ्क लगता; परन्तु बनबीर ने गद्दी बैठते ही ऐसा प्रबन्ध किया कि उस समय किसी का साहस उसे पकड़ने वा गद्दी से उतारने का न हुआ। विक्रमादित्य जी को मार बनबीर तुरन्त सांगाजी के सब से छोटे पुत्र उदयसिंह जी के मारने के लिये भीतर गया; ये उदयसिंह जी निरे बालक थे और रणवास में एक पालन में सोते थे। बनबीर के पहुंचने से पहिले ही एक नायन ने जिस को इस भेद का निश्चय हो गया था अपने राजा का वंश रखने के लिये उदय सिंह जी को तो पालने में से चुपके से उठा लिया और अपने पुत्र को उन के स्थान में सुला दिया। बनबीर ने जाते ही उदयसिंह जी के भरोसे उस बालक को मारडाला। वह नायन एक बारी की सहायता से उदयसिंह जी को लेकर कूमलमेर चली गई जहां के अधिकारी ने अपने भानजे के नाम से उदयसिंह जी

सिंह का बध करने के लिए आता है। दाई ने उसी समय उदयसिंह को एक टोकड़ी में सुला कर और ऊपर से पत्ते रख कर नाऊ को दे दिया। विश्वासपात्र नाऊ वह टोरी लेकर किसी निरापद स्थान पर चला गया। इतने में बनवीर हाथ में तलवार लिए हुए आया और पन्नाधात्री से पूछा—

को कूमलमेर रख लिया, चार वर्ष पीछे इन का भेद सब मेवाड़ में प्रसिद्ध हुआ तो सरदारों को उदयसिंह जी के बच जाने के समाचार सुनकर बड़ाही आनन्द हुआ. झटपट सब के सब कूमलमेर में इकट्ठे हुये और उदयसिंह जी को साथ के चित्तौड़ पर चढ़ आये और बनवीर को निकाल कर सम्वत १५९७ में उदय सिंह जी को गद्दी बिठाये।'

चित्रमाला के सम्पादक मुन्सिफ देवीप्रसाद ने टाड साहिब की किताब पर गलती देखाने के लिये पन्नाधात्री की कथा को झूठ माना है पर जब तक वीरविनोद न देखेंगे तब तक हम इस पर विशेष न लिखेंगे। पर यह कथा झूठ नहीं है। मुन्सिफ साहेब का लेख नीचे लिखा है।

"करनल टाड ने अपनी किताब में महाराणा उदयसिंह की बहुत बुराई लिखी है मगर हम को उससे कुछ वास्ता नहीं क्योंकि अपनी२ राय है लेकिन मतलब लिखने में जो गलतियां उनसे हुई हैं वे अलबत्ता ध्यान देने के लायक हैं।

जैसे उन्हों ने महाराणा उदयसिंह के वास्ते लिखा है कि सांगाराणा का वह बेटा जो उस के मरे पीछे पैदा हुआ था (सफे ३३१ तरजुमे टाड राजस्थान नवलकिशोर के छापेखाने की छपी हुई) (बनबीर की गद्दीनशीन के वक्त) ६ बरस का था बारी उस को मेवे की टोकरी में पत्तों से छुपा कर ले गया वह सोया हुआ था धाय उसको लेकर कुंभलमेर में पहुंची वहां के हाकिम आसासाह ने भानजा बना कर रक्खा और ७ बरस तक वहां छुपा रहा (सफा ३३६) उदयसिंघ संबत् १५९७ (सन १५४१-४२ ई०) में गद्दीनशीन हुआ (सफा ३३९) और उसी साल (१५४२) में अकबर भी पैदा हुआ था (सफा ३४०) सो यह बिलकुल गलत है क्योंकि महाराणा उदयसिंह अपने बाप की जिन्दगी में उन के मरने से ८ बरस पहिले भादों सुद ११ संवत १५७८ को पैदा हुए थे और बनवीर की गद्दीनशीने के वक्त १४ बरस के थे महाराणा सांगा जी ने अपनी जिंदगी में उन को और उन के बड़े भाई बिक्रमाजीत को रणथंभोर का किला दे दिया था और वें वहां रहते थे महाराणा रतनसिंह के वक्त में चितौड़ आये और राणा बिक्रमाजीत ने उन को कुंभलमेर का किला दिया था और वे

उदयसिंह कहाँ है ? दाई ने कुछ उत्तर न दिया शिर झुकाए हुए अपनी सोते हुए पुत्र की ओर अंगुली उठा दी। दुष्ट बनवीर उसी के पुत्र को उदय सिंह समझ कर हत्या ले के चला गया । इधर राजकुल की ललनाओं के रोदन की ध्वनि के मध्य धात्रीपुत्र की अंतिम क्रिया सम्पन्न हुई । श्रीमती पन्नादेवी चुपचाप आंखों में आंसू भरे हुए प्यारे पुत्र की प्रेतकृत्य देख चुकने के उपरांत उपर्युक्त नाऊ के निकट चली गईं।

इस प्रकार पन्ना ने निरसंकुचित चित्त से अपने हृदयरंजन शिशु को वधिक के हाथ में समर्पित कर के महाराना संग्रामसिंह के प्रिय पुत्र का जीवन बचा लिया। जिस पूजनीया रमणी ने चित्तौर के लिए, बाप्पा राव के वंश की रक्षा के लिए अपने जीवन के अद्वितीय अवलम्बन, स्नेह के एक मात्र भाजन, नेत्र की ज्योति प्यारे पुत्र को मृत्यु के मुख में रख दिया उस के स्वार्थ त्याग की क्या परिमिति होसकती है ? जिस रमणी ने हृदयरंजन कुसुम कोरक को वृन्तच्युत होते देख के भी अपने कर्तव्य से मुंह न मोड़ा उस के हृदय की महानता को कोई क्या वर्णन कर सकता है ? आज इस महान स्वार्थ त्याग एवं परमोत्कृष्ट तेजस्विता की महिमा कौन समझेगा ? हे बंगालियो तुम भीरु हो ! सची तेजस्विता आज तक तुम्हारे हृदय में नहीं

---

१ दफे सुलतान बहादुर गुजराती के पास भी गये थे बनवीर के समय में उन को कोई जरूरत आसासाह के भानजे बनने की न थी और न वे इस तरकीब से छुप सकते थे ।

दूसरे उदयसिंह जी की मसनदनशीनी और अकबर बादशाह की पैदायिश हरगिज़ १ साल में नहीं हुई है क्योंकि अकबर बादशाह महाराणा की गद्दीनशीनी से करीब २ बरस के पीछे कातिक सुदी ६ सं. १५९९ को पैदा हुये थे और सं. १५९७ हिसाब से सन् १५३९-४० के मुताबिक थे १५४१-४२ के नहीं थे तीसरे जो उन्हों ने महाराणा की उमर ४२ साल लिखी है वह भी गलत है क्योंकि वे ५० वर्ष के होके मरे थे पत्ता सीसोदिया का १६ बरस की उमर में काम आना लिखा है मगर सही यह है कि उस वक्त उस की उमर ज़ियादा थी उस के कई बेटे होगये थे जिन में ३ यानी कल्ला सेखा और करण महाराणा प्रताप के बिखे में शामिल रहने के लायक हो गये थे। "

भाई ! तुम सच्ची देशहितैषिता का महान भाव अभी तक नहीं समझ सके ! पश्चिमोत्तर देशियो ! तुम केवल पूज्यपाद पूर्वजों का नाम डुबाने के लिए उत्पन्न हुए हो ! तुम्हारे साढ़ेतीन हाथ के शरीर में कदाचित प्राचीनकाल के ब्राह्मण क्षत्रियों का अंशलेशमात्र भी नहीं है ! तुम इस उदारता की महिमा क्या समझोगे ? तुम तो आश्चर्य नहीं जो पन्ना को राक्षसी कह के घृणा करो पर प्रकृत देशहितैषी और यथार्थ तेजस्वी इस असामान्या धात्री को दूसरी दृष्टि से देखेंगे। जो कुछ पन्ना ने किया वह साधारण लोगों का काम नहीं है ! साधारण जन उस के बृहत्कार्य का महत्व भी नहीं समझ सकते। हाय आज भारत में ऐसे असाधारण व्यक्ति कितने हैं ? प्रतिध्वनि प्रश्न करती है – कितने हैं ? भारत तो आज निर्जीव एवं निश्चेष्ट हो गया है ! हिन्दुस्थान आज पाले के मारे वृक्ष अथवा कच्छप की भांति अपने ही अस्तित्व में लुक्कायित हो रहा है ! फिर हमारे प्रश्न का उत्तर कौन देगा? प्रतिध्वनि जिज्ञासा करती है—कौन देगा ?

प्रतापसिंह का वीरत्व ।

आज १६३२ सम्वत के श्रावण मास की सप्तमी है। आज राजपुताना के राजपूतगण मातृभूमि के लिए अपने प्राण देने को कटिबद्ध हैं । अकबर बादशाह के ज्येष्ठ पुत्र सलीम राजा मानसिंह के साथ मेवाड़ पर अधिकार करने की मनसा से आए हैं। * विधर्मी यवन पवित्र सूर्यवंश को कलंकित

---

* तारीख़ तुहफ़ए राजस्थान में यों लिखा है । 'एक बार गुजरात से लौटते हुए आंबेर के कुंवर मानसिंह ने उदयसागर तालाब पर क़ियाम किया, जहां महाराणा ने पेश्वाई के साथ उस की दावत की; लेकिन खाने के वक़्त मानसिंह के साथ शरीक होने की बाबत महाराणा ने कुछ उज्र कहला भेजा, जिस से वह नाराज़ हो कर चला गया. संवत् १६३३ मुताबिक़ सन् १५७७ ई० में इस रंजिश के सबब मानसिंह बादशाही लश्कर ले कर मेवाड़ पर आया, और गोगूंदे की तरफ़ हल्दी घाटे में खमनौर गांव के क़रीब महाराणा से सख़्त मुक़ाबलह हुआ; दो पहर तक लड़ाई होने बाद बादशाही फ़ौज कई कोस तक पहाड़ों में बिखर गई, लेकिन इस नाजुक वक़्त पर मानसिंह की गिर्दावर फ़ौज ने नक़्क़ारह

करना चाहते हैं पर राजस्थान के वीरशिरोमणि प्रतापसिंह अपने कुल को निष्कलंक रखने पर उद्यत हैं सच्चा क्षत्रिय वीर आज सच्चे क्षत्रियत्व की गौरव रक्षा में कृत संकल्प है। चिरस्मरणीय हलदीघाट के मैदान में बाईस सहस्र राजपूत एकत्रित हैं उन के अधिनेता महाराना प्रतापसिंह हैं जो पराक्रान्त मुगलों का गतिरोध करने में उद्यत हो रहे हैं।

हलदीघाट पहाड़ी रास्ता है जिस के उत्तर पश्चिम और दक्षिण ओर ऊंचे २ पर्वत खड़े हैं। वह स्थान वन, पर्वत तथा क्षुद्र नदियों से पूर्ण है। प्रताप सिंह उसी गिरिवर्त्म का आश्रय लेके शाहज़ादे का सामना करने में प्रस्तुत हैं। हलदीघाट वाले युद्ध का दिन राजपूत वीरों के अनन्त उत्सव का पर्व है जिस में युद्ध के लिए उन्मत्त हो हो कर क्षत्रियगण अपने प्राण देने पर उतारू हो रहे हैं और प्रताप सिंह सब के आगे खड़े हैं। वह पहिले आम्बेर के राजा मानसिंह की ओर झपटे पर मानसिंह दिल्ली की बहु संख्यक सेना के मध्य में थे प्रताप सिंह उस को भेद न कर सके किन्तु मेघ के समान गंभीर स्वर से मान सिंह को—का पुरुष! राजपूतकुलांगार! कह कर तिरस्कार किया। मान सिंह ने इस वाक्य पर कर्णपात न किया। तब जिधर युवराज सलीम हाथी पर बैठे हुए युद्ध कर रहे थे उधरही को प्रताप सिंह ने खड्ग प्रक्षेप किया। एक २ आघात में सलीम के रक्षकगण भूमिशायी होनेलगे हाथी का महावत भी मर गया और प्रताप सिंह निर्भय रूप से युद्ध

बजाकर बादशाह के आ जाने का झूठा शोर मचा दिया, जिस से मेवाड़वालों के पांव उखड़ गये, और उन को हासिल होने वाली फ़तह दुश्मनों को नसीब हुई, कर्नेल टाड ने इस मौके पर बादशाही फ़ौज का अफ़सर शाहज़ादह सलीम को, और उस का नाइब महावत ख़ां को लिखा है, जो महज़ गलत है; शाहज़ादह सलीम उस वक्त छः बरस उम्र में था, और महावत ख़ां पैदा भी न हुआ था; इस के सिवा महावत ख़ां को सगर जी सीसोदिये का बेटा होना भी गलत लिखदिया है;वह काबुल के रहनेवाले गयूरबेग का बेटा था, और उस का असली नाम ज़मानहबेग है; इस लड़ाई के तीस बरस बाद जहांगीरने बादशाह बन कर उस को महावत ख़ां ख़िताब दिया. (देखो तुज़ुक जहांगीरी व इक़बाल नामह, जिल्द अव्वल.)

में प्रवृत्त हुए। तीन बार मुगलदल में प्रवेश किया तीनों बार उन के जीने की आशा न रही थी पर राजपुतों ने अपने प्राण हथेली पर धर कर उन की रक्षा की। राणा की प्राणरक्षा के निमित्त उन्हों ने अपने प्राण को तुच्छ समझ लिया था। प्रताप सिंह ने इतने पर भी साहस नहीं त्यागा। उन के शरीर में एक गोली तीन भाले और तीन तलवारें लगी थीं तौभी वह उन्मत्त की भांति शत्रुसेना में घुस ही पड़े इस बार भी राजपूतों ने उन के उद्धार का उद्यम किया पर उन में से अनेक योद्धा वीर गति को प्राप्त हो गए थे। मिवार के गौरवस्थल वीरगण प्राय: सभी धरती देवी पर तरवार हाथ में ले के प्राण चढ़ा चुके थे प्रताप सिंह ही के मस्तक पर राजछत्र शोभा पा रहा था उन्हें चारों ओर से मुगलों ने घेर लिया उक्त छत्र के कारण महाराणा के प्राण तीन बार संकट पड़े थे किन्तु उन्होंने राजचिन्ह की परित्याग न किया था पर इस बार उन की प्राणरक्षा दुस्साध्य बोध होने लगी यह देखकर झाला कुलतिलक मान्ना ने शीघ्रता सहित सेना समेत प्रताप सिंह के पास गमन किया और झट से राजकीय छत्र अपने शिरपर धारण कर लिया इस कारण मुगलों ने मान्ना को प्रताप सिंह समझ कर उन की ओर धावा किया। इस बार मुगलों का व्यूहभेद हो गया और प्रताप सिंह बच गए पर वीरवर मान्ना प्रभु भक्ति के उत्साह में महासाहस के साथ युद्ध करके सेना सहित वीरलोक को पधार गए। मुगलगन राजपुत्र के विक्रम की प्रशंसा करने लगे पर क्षत्रिय वीर जय लाभ न कर सके। मुगल चारो ओर टीड़ी दल की भांति छाए हुए थे उनका निश्शेषन हुवा क्षत्रिय चौदहों सहस्र हल्दीघाट में अनन्त निद्रा को प्राप्त हो गए तब महाराना ने जय प्राप्ति से निराश हो कर रणक्षेत्र परित्याग कर दिया। इस प्रकार हल्दीघाट का समर समाप्त हुवा चतुरदस सहस्र क्षत्रिय योद्धा प्रसन्न वदन असंकुचितमन से देश रक्षार्थ स्वर्गवासी हुए। हल्दीघाट परम पवित्र क्षेत्र है कवियों की रसमयी कविता अनंत काल तक उस का गुण गान करेगी इतिहास लेखकों की पक्षपात रहित लेखनी असीम समय तक उस के यश का उल्लेख करेगी। प्रताप सिंह देव की सदा सर्वदा वीरेन्द्रसमाज में हार्दिक श्रद्धा समेत पूजा होगी और महाराना महोदय आकल्पांत नित्य धाम में विराजमान रहेंगे।

प्रतापसिंह अनुचर विहीन हो के चैतक नामक नीलवर्ण विशिष्ट तेजस्वी अश्व पर आरोहण कर के रणभूमि से प्रस्थान करगए। उस घोड़े का पौरुष भी राजस्थान के इतिहास का एक वर्णनीय विषय है। जिस समय दो मुगुल सर्दार प्रताप सिंह के पीछे धावित हुए उस समय चैतक ने एक पहाड़ी नदी का उल्लंघन कर के अपने स्वामी की रक्षा की थी पर वह भी युद्ध स्थल में बहुत ही आहत हो चुका था तथापि क्षतविक्षत वाहन अपने आहत स्वामी को ले चलने में विमुख नहीं हुआ अकस्मात महाराना को पीछे से घोड़े की आहट सुनाई दी फिर कर देखते हैं तो उन का सहोदर भ्राता शक्त आ रहा था। यह उन का शत्रु था और भ्रातृस्नेह को तिलांजली दे कर मुगुलों से जा मिला था अतः प्रताप सिंह ने उस क्षत्रियकुलकलंक भाई को देख के क्रोध एवं क्षोभ के मारे घोड़ा खड़ा कर दिया किन्तु इस बार शक्त ने कोई विरुद्धाचरण नहीं किया वह हलदीघाट में ज्येष्ठ बंधु का अलौकिक साहस देख चुका था स्वदेशियों की देश भक्ति का परिचय पा चुका था इस से मन में ग्लानि उत्पन्न हो गई थी अस्मात इस समय क्षत्रियशोणित को अपवित्र न कर के नेत्रों में आंसू भर कर भ्राता के चरणों पर शिर रख दिया फिर क्या था महाराना प्रतापसिंह उस के सब अपराध भूल गए बहुत दिन का बैर जाता रहा स्नेह पूर्वक लघुभ्राता को छाती से लगा लिया उस समय दोनों भाइयों ने राजस्थान के विलुप्त गौरव के उद्धार की दृढ प्रतिज्ञा करली मार्ग में चैतक का प्राणांत हो गया प्रिय अश्वरतन के स्मरणार्थ प्रताप सिंह ने उस स्थान पर एक मंदिर बनवा दिया जो आजतक "चैतक के चबूतरे" के नाम से प्रसिद्ध है।

चिरस्मरणीय हलदीघाट के मध्य १५७६ ई० की जुलाई में मेवाड़ के गौरव स्वरूप राजपूतों का रक्तप्रवाहित हुआ था। इधर सलीम ने विजय प्राप्त कर के रणभूमि को त्याग किया। कमलमीर * और उदयपुर शत्रुओं के हाथ

---

* कमलमीर मेवाड़ का एक प्रसिद्ध गिरिदुर्ग है ठीक नाम उस का कुंभमेरु है। मेवाड़ के राना कुंभ ने उसे बनवाया था।

में पतित हुए प्रतापसिंह संतान समेत वन २ पर्वत २ में जा कर वैरियों से अपनी प्राणरक्षा करनेलगे। बड़े भारी कष्ट के साथ कई वर्ष व्यतीत हुए पर महाराना ने मुगलों की आधीनता स्वीकार नहीं की। मेवाड़ का आकाश क्रमशः अधिक अंधकार मय होने लगा शत्रुओं ने अनेक स्थान पर अधिकार कर लिया तौभी प्रतापसिंह अटल बने रहे उन्हों ने बाप्पा का पवित्र रक्त कलंकित नहीं किया। इस समय प्रताप सिंह ऐसी विपत्ति में थे कि एक बार विश्वासी भीलों ने एक निरापद स्थान में लेजाकर भोजन देके उन के परिवार की प्राणरक्षा की थी।

प्रतापसिंह का असाधारण स्वार्थत्याग और महाकष्ट और सदाशयदेख सुन कर शत्रुओं का हृदय भी आर्द्र हो गया था। दिल्ली के प्रधान राजकर्मचारी ने उन की देशहितैषिता पर मोहित हो कर प्रतापसिंह को सम्बोधन कर के एक इस आशय की कविता लिख भेजी थी॥कि—संसार में स्थिर कुछ भी नहीं है। धरती और सम्पति अदृश्य हो जायगी किन्तु महान पुरुषों का धर्म कदापि लुप्त न होगा प्रतापसिंह ने धन और धरती को परित्याग कर दिया है पर कभी मस्तक नहीं अवनत किया। भारत के राजगण में केवल उन्हीं ने अपने वंश के सन्मान की रक्षा की है इस प्रकार विधर्मी शत्रुओं के प्रशंसापात्र हो कर महाराना वन २ में फिरने लगे प्राणाधिका पत्नी एवं पुत्रादि का कष्ट उन्हें समय २ पर व्यथित करने लगा पांच बार उन्हों ने

॥ इतिहास राजस्थान में चारण रामनाथ रत्नू ने लिखा है। "निदान इसी प्रकार प्रति वर्ष, वर्षा ऋतु के बीतने पर बादशाही सेना प्रतापसिंहजी पर चढ़ती, वे बड़ी वीरता से उस का सामना करते और वर्षाऋतु के आने पर फिर कुछ अवकाश प्रतापसिंह जी को मिल जाता था परन्तु प्रतिवर्ष उन के गढ़ और भूमि मुसल्मानों के हस्तगत होते जाते थे तिस पर भी उन्हों ने साहस न छोड़ा जिस से बादशाही दरबार के प्रायः वीर पुरुष प्रतापसिंह जी की प्रशंसा करने लग गये थे वरन नव्वाब खानखाने मारवाड़ी भाषा में उन को यह दोहा भी लिख भेजा था:—

ध्रम रहसी रहसी धरा, खिस जासे खुरसांण।
अमर विसम्भर ऊपरे, राखि न नहचो राण ॥ १ ॥

इस का अभिप्राय यह है कि हे महाराणा साहब परमेश्वर पर विश्वास रखिये आप का धर्म और देश दोनों बने रहेंगे और बादशाह हार जायगा।

खाद्य सामग्री का आयोजन किया किन्तु सुविधा के अभाव से उन्हें प्रत्येक वार उस को त्यागकर पार्वत्य प्रदेश में चला जाना पड़ा। एक बार उन की महाराणी और पुत्रवधू ने घास के बीजों के द्वारा कुछ रोटियां बनाई थीं उन का एक भाग तो सब लोगों ने एक पहर खा लिया और दूसरा भाग दूसरी जून के लिये रख छोड़ा। पर एक वनबिलाव वह बची हुई रोटी भी लेकर भाग गया यह देख कर महाराना की एक पुत्री कातर भाव से रोने लगी प्रताप सिंह थोड़ी ही दूर पर लेटे हुए अपनी दशा का सोचकर रहे थे लड़की का रोना सुनकर चौंक पड़े और देखा कि रोटी अपहृत हो गई है कन्या रो रही है, जिन्होंने अम्लान वदन से हलदी घाट में सजातियों का शोनितशोत देखा था, प्रसन्नता पूर्वक जाति भाइयों को देश को गौरवरक्षा के लिए प्राण दे देने पर उत्तेजित किया था, आनंद सहित राजपूत कुल की प्रतिष्ठा रक्षणार्थ रणस्थल वर्तिनी कराल संहार मूर्ति का कुछ भी भय न किया था वरंच कह दिया था कि "राजपूत इसी प्रकार ऐसे समय में देह त्याग करने के लिए जन्म लेते हैं!" उन का हृदय भी इस अवस्था में कन्या को क्रन्दना को न सह सका! चित्त विकल हो गया, मानो शतावधिकाल सर्पों ने आकर दंशन कर लिया! अधिक यंत्रणा सहन न हो सकी अपना कष्ट दूर करने के मानस से अकबर के निकट आत्म समर्पण का अभिप्राय विदितकर दिया। अकबर ने इस का समाचार पाकर नगर में उत्सव करने की आज्ञा दे दी। और प्रतापसिंह का पत्रहिदक पत्र बीकानेर के राजा के छोटे भाई स्वजाति हितैषी पृथिवीराज * की दृष्टि पड़ गया। वह प्रताप सिंह की बड़ी श्रद्धा करते थे इस से ऐसा होते देख कर बहुत ही दु:खी हो गए और उसी समय महाराना के पास इस अभिप्राय की कई एक कविता लिख भेजी कि :—

* रागनाथरत्नू ने लिखा है (प्र.ना.)। "राय सिंह जी के छोटे भाई पृथ्वीराजजी भी बड़े वीर थे अकबर उन से और भी अधिक प्रसन्न रहा करता था; उदयपुर के महाराणा प्रताप सिंह जी की प्रशंसा के चवदह दोहे इन्हीं पृथ्वी सिंह जी ने बनाये थे जो समस्त राजस्थान में प्रसिद्ध हैं।" और स्थान पर लिखा है। "इसी प्रकार एक बार बीकानेर के महाराजा के छोटे भाई पृथ्वीराज ने भी, जो अकबर के बड़े कृपापात्र थे, चवदह दोहे प्रताप सिंह जी की प्रशंसा में बना कर लिख भेजे थे; पृथ्वीराज जी ऐसे कवि थे कि उन के चवदह दोहों से प्रताप सिंह जी को चवदह सहस्र मनुष्यों की सी सहायता मिली; वे दोहे राजस्थान भर में प्रसिद्ध हैं।"

"हिन्दुओं को समस्त आशा हिन्दू जाति ही पर निर्भर करती है। * इस समय

---

* खड्गविलासप्रेस के प्रबंध कर्त्ता बाबू साहिबप्रसाद सिंह के नाम से राजस्थान के कर्त्ता रामनाथरत्नू ने जो पत्र लिखा है उसको मैं यहां प्रकाश करता हूं। इसमें पृथ्वीराजजीकी आठ कविता है।

श्रीयुत मान्यवर,

कृपा पत्र आपका बहुतही स्नेह भरा परसूं आया मैं आप का बहुतही उपकार मानता हूं कि आपने मुझ अनजान मनुष्य पर इतनी प्रीति दिखलाई ॥ आपके पत्रके देखने से निश्चय हुआ कि आपने मेरे तुच्छ इतिहास को बहुत मन लगाकर आद्योपान्त पढ़ा ; बीरचरित्र ग्रंथ बहुतसा तो लिखा गया है और कुछ अब भी लिखा जाता है; ईश्वर ने चाहा तो ग्रन्थ अच्छा होगा; मैंने राजस्थान के बीरों के नामों को बहुत ढूंढ़ा है और अबतक भी ढूंढ रहा हूं परन्तु पश्चात्ताप का विषय है कि उन लोगों के सविस्तर जीवनचरित्र नहीं मिलते आगामी ग्रीष्मऋतु में या वर्षाऋतु में यह बीरचरित्र छपने को भेजदिया जायगा और शीघ्र आप लोगों की सेवा में उपस्थित होगा संभव है कि आप लोग उस को देखकर प्रसन्न होवेंगे ॥

मैं इस बात का बहुतही उपकार मानता हूं कि आप ने कृपा कर के नाटकावली की पुस्तक मुझ को भेजी। कवियों, बीरों और सतियों के जीवनचरित्र के लिये जो विज्ञापन भेजा सो पहुंचा तीन चार विज्ञापन आप मेरे पास और भेजदेवैं कि मैं उन को मेरे मित्रों के पास भेजदूं सम्भव है कि वे आप को कुछ सहायता दें ॥

अब मैं आप के प्रश्नों का क्रम से उत्तर देता हूं:—

१, बीकानेर के कविराजा दयालदासजी से मेरा विशेष सम्बंध है उनके यहां जो कुछ है सो सब मुझको प्राप्य है परन्तु उन के ग्रन्थ बहुत हैं और बहुत बड़े २ हैं पूरा २ ब्योरा उन के ग्रन्थों का बीकानेर से मंगवाया है वहां से उत्तर आनेपर आप को लिखदूंगा; उनके सब ग्रन्थ मैं मंगवासक्ता हूं।

२. जयपुर की पृथक् २ सब बंशावली तो मेरे पास नहीं रही हैं जिन के यहां से आई थी वहीं पीछी भेजदीगई परन्तु दो तीन बंशावलियों की नकलें मैंने करवाली है सो मेरे पास मोजूद हैं ॥

३. जेसलमेर की बंशावली ठाकुर साहबप्रताप सिंहजी के यहां से आईथी सो पीछी गई परंतु उस को मैं जब चाहूं तबही मंगा सक्ता हूं ॥

राना उन सब को परित्याग किए देते हैं। हमारे गिरधरों में वह वीरत्व नहीं

---

४. जयलालजी का किशनगढ़ का इतिहास अभी बन रहा है पूर्ण नहीं हुआ है।

५. शेखावाटी के इतिहास का सब सामान मेरे पास है वहां का पृथक इतिहास मैं लिखरहा हूं ॥

६. बीकानेरी पृथ्वीराजजी के चवदह दोहों में से आठ मुझको मिलगये हैं; वे दोहे यहां की देश भाषा में हैं इसी पत्र के साथ भेजे हैं ॥

७. महाराजा मानसिंहजी ने जिन तब कवियों को छव करोड़ दान दिया उनका सविस्तर वृत्तान्त मैं आप को अवश्य भेजदूंगा परन्तु कुछ अरसा लगेगा।

८. कुलपति मिश्र का वृत्तान्त बहुत कुछ मैं आप को भेजूंगा ग्रन्थ भी उन का मिल सक्ता है ॥

९. प्रतापसागर (अमृतसागर) छापगया है बहुत मिलता है ॥

१०. चारण चतुरभुजजी की कविता आदि का अन्वेषण करूंगा यदि मिलजायगा तो आपकी सेवा में भेजदूंगा ॥

११. सूरसिंहजी ने जिन कवियों को छव माग दिये उन का विशेष वृत्तान्त ज्ञात नहीं ॥

१२. करणीदानजी का सूर्यप्रकाश मेरे पास है ॥

१३. वभूतदानजी की कविता का कोई ग्रन्थ तो है नहीं पर जीवनचरित्र उन का मिल सक्ता है ॥

१४. वृन्दजी के जीवनचरित्र के लिये जयलालजी को लिख दिया है।

१५. सावन्त सिंहजी के ग्रन्थों की सूची किशनगढ़ से मंगवाई है आने पर भेजदूंगा।

१६. रत्ताजी के वृत्तांत के लिये ठाकुर प्रताप सिंहजी को लिखा है।

१७. रतनजी तथा हरभाणजी में से रतनजी का वृत्तांत तो पूरा २ मैं ही मेरे गाम से मंगवा कर आप को भेजूंगा और हरभाणजी का विशेष वृत्तांत ज्ञात नहीं जितनासा वृत्तांत वंशावली में लिखा था सो इतिहास में लिख दिया गया।

१८. हरपालजी रतनू के लिये ठाकुर साहब प्रताप सिंहजी को लिखा है।

१९. सूर्यमल्लजी का सम्पूर्ण जीवनचरित्र मैंने मंगवाया है आने पर आपको भेजदूंगा अथवा आप स्वयं उन के पुत्र मुरारिदानजी को लिख सक्ते हैं। सूर्य-

रहा, स्त्रियों के सतीत्व का वह गौरव नहीं रहा, प्रताप सिंह न होते तो अक-

---

मल्लजी का बनाया हुआ वंशभास्कर नामी बहुतही उत्तम ग्रंथ है परंतु बहुत बड़ा है; उस में बारह राशि हैं जिनमें से दश ग्यारह राशि यहां ठाकुर साहब जोरावर सिंहजी चांपावत के पास मौजूद हैं; एक भाग उस ग्रंथ का अर्थात् दशम राशि का उम्मेदसिंह चरित्र बूंदी महाराजा साहब की आज्ञा से वहां के रंगनाथ यंत्रालय में छपा है मेरे मित्र कवि बालाबखशजी के पास यहां मौजूद है यदि आप चाहैं तो उनसे लेकर जितने दिन के लिये आप चाहैं भेज दे सक्ता हूं ॥ ग्रंथ देखने योग्य है ।

इन के उपरांत यहां के बहुत नामी २ कवियों के जीवनचरित्र मैं आप को अवश्य भेजूंगा; बारहट नरहरिदासजी यहां के नामी कवि हुये हैं उन्हों ने बहुत अच्छी कविता में अवतार चरित्र ग्रंथ बनाया है नरहरिदासजी बादशाह अकबर के पास रहा करते थे जिसकी उन पर बहुत कृपा थी उन का ग्राम पुष्कर से पांच कोशपर रहला नामी ग्राम था जो अद्यावधि उन के भाई की संतान के अधिकार में है स्वयं उन के कोई संतान नहीं था ॥ इन का ग्रंथ अवतारचरित्र बम्बई में छप गया है मूल्य ७) रुपये हैं बहुत बड़ा ग्रंथ है ॥ इन के उपरान्त और भी बहुत नामी नामी कवि हुये हैं जिनका जीवनचरित्र जितना कुछ मुझ को मिलैगा मैं लिखकर आप को भेजूंगा ॥

और मेरे इतिहास का विज्ञापन छापना आपने स्वीकार किया इस का मैं कहांतक उपकार मानूं यह आप की कृपा है द्विजपत्रिका जिस में विज्ञापन छपा काल मेरे पास पहुंची ॥

जहांतक हो सकेगा मैं आपको बहुत कवियों की लाइफ दूंगा ।

जयपुर भा० बदि १४ सं १९४९ का ता० २१ अगस्त सन् १८९२	}	आप का शुभचिंतक रामनाथरत्नू राजपूत स्कूल जयपुर ।

पृथ्वीराजजी के आठ दोहे—

सोरठा—अकबर घोर अंधार, ऊंघांणा हिन्दू अवर ।
जागे जग दातार, पोहरे राण प्रतापसी ॥ १ ॥

कर सभी को सम समभूमि में ले आते। हमारी जाति रूपी बाजार में अकबर एक व्यापारी हैं उन्हों ने सभी को मोल ले लिया है केवल उदयसिंह के पुत्र को क्रय नहीं कर सके। सभी ने साहस खोकर नौरोज़ के बाज़ार * में अपना २ अपमान देखा है केवल हमीर के वंशधर † ने आज तक नहीं देखा, संसार

अकबरिये इण बार, दागिल की सारी दुनी।
अणदागिल असवार, चेटकराण प्रतापसी ॥ २ ॥
अकबर समद अथाह, सूरापण भरियो सुजल।
मेवाड़ो तिण माह, पोयण फूल प्रतापसी ॥ ३ ॥
आई दो अकबरियाह, तेजांतहारो तुरकड़ा।
नगि नगि नीसरियाह, राण बिना सहराजवी ॥ ४ ॥
चौथो चीतोड़ाह, बांटो बाजंती तणूं।
दीसे मेवाड़ाह, तो शिर राण प्रतापसी ॥ ५ ॥

दोहा—जननी सुत अइड़ा जणे, जइड़ो राण प्रताप।
अकबर सूतो हि ओभके, जाण सिराणे साप ॥ ६ ॥

सोरठा—पातळ पाघ प्रमाण, साची सांगा हर तणी।
रही अभोगत राण, अकबरसूं बभी अणी ॥ ७ ॥
सोवै सह संसार, असुर पलोळे ऊपरे।
जागे तूं तिण वार, पोहरै राण प्रतापसी ॥ ८ ॥

* नौरोज़ को खुश रोज़ अर्थात् आनन्द का दिन भी कहते हैं इस ग्रंथ के पंचम खंड के "वीराङ्गना के वीरत्व महिमा" इस प्रबंध में उस दिन वाले बाज़ार का वर्णन किया गया है।

† हमीर के वंश धर महाराणा प्रताप सिंह हैं। तुहफ़ए राजस्थान से हमीर का वृत्तांत नीचे लिखा जाता है। (प्र० ना०)

२५—महाराणा हमीर, अव्वल—हमीर की पैदाइश के बाब में एक क़िस्सह मशहूर है, जिस का मतलब यह है:— उस का बाप अरसी वली अहदी के दिनों में शिकार खेलने की नज़र से केलवाड़े की तरफ़ गया था, जहां उस को एक ग़रीब चन्दाना राजपूत की बेटी (चहुवानों की एक शाख़ है) जंगल में फिरती हुई पसन्द आई; उस को अरसी ने शादी करके अपने बाप से पोशीदह पहाड़ों में रक्खा, जिस से हमीर पैदा हुआ, जो अपने रिश्तदहदार याने चचा अजयसी वग़ैरह के पहाड़ी इलाक़े में चले आनेपर उन का शरीक होगया।

जिज्ञासा करता है कि "प्रताप का अवलम्बन कहां है ?" पुरुषार्थ और तलवार ही उन का अवलम्बन है ! इन्हीं के बल से वे चलियल की सहल की रचा

हमीर की मसनदनशीनी कर्नेल टाड ने सन् १३०१ ई० में बयान की है, जिस को गलत और कम से कम पचास बरस बाद (जिस का खास वक्त मालूम नहीं हुआ) समझना चाहिये; इस वास्ते कि अलाउद्दीन खिल्जी का हमलह सहीह तौर पर सन् १३०१ ई० में साबित हो चुका है, चित्तौड़ की तबाही के वक्त उस की मसनद नशीनी ख़याल में नहीं आसक्ती; हमीर को अजयसींने बहुत अर्से बाद पहाड़ी इलाके में अपना वलीअह्द बनाया था ।

चित्तौड़पर हमीर का कब्जह—राणा हमीर अपने चचा अजयसी के मरने बाद मेवाड़ के पश्चिमी इलाके में रहकर चित्तौड़ के हाकिम राव मालदेव का मुल्क लूटते रहे, जिस ने किसी मस्लिहत से उन के साथ अपनी बेटी की शादी का पैगाम भेजा, और इन्होंने बावुजूद तमाम सर्दारों की मुखालफत के कुबूल कर लिया. हमीर ने शादी के बाद अपनी राणी की सलाह और एक महता कौम के कारदार की मिलावट से राव मालदेव की गैर हाजिरी में चित्तौड़ का किला दबा लिया, और राव को लाचार अपने कदीम इलाके पर सब्र करना पड़ा ।

कर्नेल टाडने मालदेव की मदद के वास्ते अलाउद्दीन के जानशीन महमूद खिल्जी का मेवाड़ पर आना और शिकस्त खाना लिख दिया है, लेकिन यह गलत है, खिल्जी खानदान में दिहली की सल्तनत पर कोई महमूद नहीं हुआ, शायद कोई सर्दार हो, जिस को बादशाह समझ लिया. मुहम्मद इब्न तुग़लक़ के बाद दिहली की कुव्वत कम होकर बंगाला, जौनपुर मालवा, गुजरात और दक्षिण वगैरह मुख्तलिफ़ सर्दार और सूबहदार खुदमुख्तार बन बैठे, जो मुगलों के अह्द तक काइम रहे; और यही मेवाड़ के तरक्की पानेका मौका था. हमीर के बाद, जिस की मौत का वक्त मालूम नहीं, महाराणा सांगा के अह्द तक दो सौ बरस के अर्से में मालवा और गुजरात के बादशाहों से मेवाड़ वालों की अक्सर लड़ाइयां रही हैं, जिन की बाबत कासिम फ़िरिश्तह मुसल्मानों की बुजुर्गी, और जेम्स टाड देशी रवायतों की ज़रिए से हिन्दुओं की तारीफ़ बयान करते हैं; लेकिन हम इतना कहसक्ते हैं, कि मेवाड़ ने उस ज़माने में अपने किसी इलाके और खुद मुख्तारी को हाथ से नहीं जाने दिया, और हमेशह दुश्मनों से मुकाबलह करके अपनी इज्जत को काइम रक्खा ।

करते हैं। बाज़ार का यह व्यवसायी सदा जीता न रहेगा एक दिन इस लोक से अवश्य चल बसेगा। उस समय हमारी जाति के सभी लोग परित्यक्त भूमि में

चारण रामनाथरत्नू ने हमीर का वृत्तांत इसरीतिपर लिखा है।
लक्ष्मण सिंहजी के पीछे अजयसीजी राणा हुये जो केलवाड़े में रहनेलगे उन को लक्ष्मण सिंहजी कहगये थे कि तुम्हारे पीछे तुम्हारे बड़े भाई के पुत्र हमीर को गद्दी देना ; इन हमीर सिंहजी का इतिहास यह है कि :—

चित्तोड़ टूटने से कई वर्ष पहिले लक्ष्मणसिंहजी के जेष्ठपुत्र अरसीजी ऊंदवा नामी गाम के जङ्गल में आखेट के लिये गये थे जङ्गल में एक सूर के पीछे जब इन्हों ने घोड़े दिये तो वह भग कर एक जुवार के खेत में घुस गया, ज्यों ही अरसीजी सूर के पीछे खेत में जाने लगे त्यों ही एक कन्या ने जो उस खेत की चौकसी कर रही थी इन को भीतर जाने से रोका और कहा कि ठहरो मैं शूकर को बाहर निकाल देती हूं। फिर उस कन्या ने जुवार का फग्दा तोड़ कर घायल शूकर को मार कर खेत से बाहर फेंक दिया। अरसीजी अपने साथियों के साथ एक नाले पर विश्राम करने के लिये ठहरे थे ; यहां पर वे परस्पर उस कन्या के पराक्रम की प्रसंशा कर रहे थे कि इतने में ही पत्थर आके अरसीजी के घोड़े के घुटने पर लगा जिस से उस का पैर टूट गया; निश्चय करने से जाना गया कि वह पत्थर भी उसी कन्या की गोफन से पक्षियों के उड़ाने के लिये फेंका गया था जो दैवयोग से घोड़े के आ लगा। कन्या को इस बात का जब निश्चय हुआ तो उसने अरसीजी के पास जाकर अपनी असावधानी की क्षमा मांगी।

सन्ध्या को लोटते समय अरसीजी को फिर वही कन्या घर जाती हुई मिली सिर पर उस के दूध का मटका था और दोनों कांखों में दो पाडिये थे; अरसीजी का एक साथी दूध का मटका उस के सिर पर से गिराने के विचार से घोड़ा दोड़ाता हुआ कन्या के बहुत पास होकर निकला जिस से वह झिझक गई और एक पाडिया गिरने लगा उस को उकसा के वह कन्या पुनः कांख में लेती थी कि दोड़ते हुये घोड़े का पिछला पैर पाडिये के साथ उस के हाथ में आ गया तो घोड़ा और सवार दोनों पृथ्वी पर गिर पड़े। पूछने से निश्चय हुआ कि वह कन्या चन्दाना जाति के एक राजपूत की पुत्री थी, अरसीजी ने उस के पिता को बुलाकर उस कन्या की याचना की पहिले तो उसने नाहीं किया परन्तु पीछे उस की स्त्री के कहने से अरसीजी की इच्छानुसार उस कन्या का विवाह उन

राजपुत्रत्व का बीज बोने के अर्थ प्रताप का आश्रय लेंगे जिस में इस बीज की रक्षा हो सके, जिस में इस की पवित्रता फिर से समुज्वलित हो सके इस के लिए सभी प्रताप की ओर देख रहे हैं।"

पृथिवीराज के यह उत्साह वाक्य सैकड़ों सहस्रों राजपुत्रों के हृदय बलदायक हुए। इन वचनों से प्रतापसिंह के 'मृतक शरीर प्रान जनु भेंटे' वह फिर देश गौरव के अर्थ उत्तेजित हो गए। और अकबर की अधीनता का विचार छोड़ दिया, पर वर्षा की ऋतु आगई थी तथा पर्वत कन्दरा में रहना दुस्साध्य था इस से मेवाड़ छोड़ कर मरु भूमि के पार होकर सिन्धु नदी के तट पर जाने का संकल्प किया एवं इसी निमित्त कुटुम्ब और थोड़े से राजपुत्रों को लेकर अरावली पर्वत से उतर के मरु प्रान्त में आए। वहीं पर उन के मंत्री ने उन के पूर्व पुरुषों का संचित समस्त धन लाकर भेंट कर दिया ❀ वह सम्पदा

से करदिया; इसी स्त्री के उदर में अरसीजी के हमीर पुत्र हुआ जो चित्तौड़ छूटने के समय बारह वर्ष का था और अपने नानेरे गया हुआ था।

जब कि अजयसीजी केलवाड़ा में रहा करते थे तो पहाड़ियों में रहनेवाले छोटे २ ठाकुर लोग उन को बहुत कुछ दुःख दिया करते थे, उन सब का मुखिया वालेछा जाति का मूंजा नामी एक राजपूत था; उस के साथ लड़ाई करने में एक दिन अजयसीजी बहुत घायल हुये और उन के दो पुत्र अजमालजी और सजनसीजी यद्यपि लड़ाई में उपस्थित थे और पन्दरह २ वर्ष की उन की आयु थी जब कि राजपूत सब कुछ करसक्ता है, तो भी दोनों भाइयों ने शत्रु का सामना करने में कुछ भी वीरता न दिखाई; तब तो अजयसीजी को अपने पिता के कथन का स्मरण हुआ और तुरन्त हमीर को उसके नानेरे से बुलाकर मूंजा बालेछा का सब वृत्तांत कह सुनाया। थोड़ेही दिनों में हमीर ने मूंजा का शिर काट कर अजयसीजी की भेट किया तो उन्हों ने प्रसन्न होकर मूंजा के रुधिर सेही हमीर के तिलक करके अपने पीछे उसको गद्दी का अधिकारी स्वीकार किया।

❀ इतिहासराजस्थान में रामनाथरत्नू ने इन के विषय में यों लिखा है। (प्र० ना०)

"जब प्रताप सिंह जी सिन्ध की उजाड़ों की सीमा पर पहुंचे तो वहां एक गांम में रहनेवाले भामाशाह नामी महाजन ने जिस के पुरुषा पहले किसी समय में चित्तोड़ के प्रधान मंत्री रह चुके थे प्रताप सिंह जी को गांठ

इतनी थी कि बारह वर्ष तक पचीस सहस्र लोगों के भरण पोषण को बहुत होती। मंत्री की यह कृतज्ञता देख कर उन्हों ने पुनर्वार अभीष्ट साधन का साहस किया। अनुचर वर्ग भी शीघ्र ही आ मिले उन्हें लेकर प्रतापसिंह अरावली के पार हुए वहां देवीर नामक स्थान में मुगलों का एक सरदार शाहवाज खां ससैन्य रहता था उसे महाराना ने युद्ध में जीत लिया वह मार डाला गया धीरे२ कमलमीर और उदयपुर भी राना के अधिकार में आ गए फिर कुछ ही दिन में अजमेर चित्तौर और मंडलगढ़ छोड़ के सभी राजस्थान उन का हो गया। यह सम्वाद अकबर ने सुना जिस प्रदेश को पराक्रमी मुगलों ने बहुत सा व्यय कर के और अनेक सेना नष्ट कर के दश वर्ष में लिया था उसे राजपूतों ने केवल देवीर की लड़ाई मारकर ले लिया। फिर मुगलों का दल मेवाड़ में नहीं आया। महाराना की विजय लक्ष्मी अटल रही। पर इस प्रकार विजयी होकर भी प्रताप सिंह शेष अवस्था को सुख से नहीं बिताने पाए। जभी पर्वत के शिखर पर जाते थे और चित्तोर के दुर्ग के प्राचीर को देखते थे तभी उन का चित्त अधीर हो जाता था। जिस चित्तौर में बाप्पाराव का जीवनकाल व्यतीत हुआ था। जिस में राजपूत कुल गौरव समर सिंह ने देश की स्वाधीनता के रक्षणार्थ दृषद्वती के तीर पर पृथिवीराज के साथ प्राण देने का उद्यम किया था। जहां बादल जयमल और पुत्त ने अम्लान वदन से स्थिरता पूर्वक प्राण उत्सर्ग किए थे वही चित्तौर आज श्मशान हो रहा है, उसी चित्तौर का प्राचीर अन्धकार मयी भयानक शैल श्रेणी के समान हो रहा है। प्रताप सिंह प्रायः इसी प्रकार की चिन्ता और कल्पना में विकल रहा करते थे। क्रमशः ऐसीही तरंगों के आघात से उन का हृदय चंचल रहता था। इसी मनोवेदना के कारण वे युवावस्था ही में मरन किनारे हो गए। कठिन रोग ने उन के शरीर पर अधिकार करलिया। महाराना और उन के सरदारों ने दुरवस्था के दिनों

देकर अपने पुरुखाओं का उपार्जित समस्त द्रव्य जो भूमि में गड़ा था यों कह के भेंट कर दिया कि यह द्रव्य महाराज का ही है और महाराज के काम में ही लगे तो उचित है मुझ को इतने द्रव्य की कोई आवश्यकता नहीं। "कार्नल टाड साहब" लिखते हैं यह द्रव्य इतना था कि कुछ और मिलाने से प्रताप सिंह जी उस के द्वारा पचीस सहस्र मनुष्यों को बारह वर्ष तक रख सकते थे। धन्य है उस महाजन को उस का नाम सदा के लिये राजस्थान भर में बना रहेगा।"

से आंधी पानी आदि के बचाव के लिए पेशोला नामक ह्रद के तीर पर जो कुटी बनाया था उसी में प्रताप सिंह ने अपने जीवन का अंतिम भाग व्यतीत किया। उन्हें अपने पुत्र अमर सिंह पर कुछ भी भरोसा न था । वे जानते थे कि कुमार अमर सिंह इंद्रियाराम युवक हैं देश की रक्षा का क्लेश वह कभी न सहार सकेंगे। पुत्र की विलासप्रियता के कारण प्रताप सिंह मरण समय तक बड़े दुखी रहते थे इसी दुःख के मारे अंतिम दिनों में महाराना का स्वर विकृत होने लगा यह दशा देख कर एक सरदार ने उन से पूछा कि आप को ऐसा कौन सा कष्ट है * जो प्राणवायु (श्वास) को सुख से नहीं निकलने

* इतिहासराजस्थान में रामनाथ रत्नू ने लिखाहै। (प्र० ना०)

" अन्त समय के महाराणा प्रतापसिंह जी के वचन स्मरण रखने के योग्य हैं सो ये थे कि जब सम्वत् १६५३ में प्रताप सिंह जी अस्वस्थ होकर परलोक को सिधारते समय बहुत उदास हुये तब सलूम्बर के रावतजी ने पूछा कि अन्न-दाता को इतना क्लेश क्यों है ? यदि कोई विशेष आज्ञा करनी है तो हम सब लोग उपस्थित हैं; प्रताप सिंह जी ने उत्तर दिया कि मैं आप लोगों से देहली के साथ कभी सन्धि न करने का वचन चाहता हूं ; मुझ को इस बात का क्लेश है कि मेरे पीछे मेरे वंश को देहली के बादशाह की आधीनी स्वीकार करनी पड़ेगी। इस पर सलूम्बर रावत जी ने प्रण किया कि जब तक मैं जीऊंगा तब तक ऐसा कभी नहीं होने दूंगा। महाराणा ने उत्तर दिया कि ठीक अब मैं इस शरीर को सुख पूर्वक छोडूंगा। इस के उपरान्त सब अन्य भाई बेटों ने ज्योंही फिर वह प्रण किया त्योंही प्रताप सिंह जी प्रसन्नता पूर्वक इस असार संसार को छोड़कर परलोक को सिधारे ।

महाराणा प्रताप सिंह जी ने ये नियम बान्धे थे कि जब तक मेरे वंश का कोई पुरुष चित्तोड़ पीछी न ले के और देहली की वही दशा न कर दे कि चित्तोड़ की हुई तब तक बापा रावल की गद्दी पर बैठने वाले को उचित है कि पलङ्ग पर सोना और थाल में भोजन करना छोड़ चटाई बिछा कर पृथ्वी पर सोवे और पत्तल में भोजन करे; क्षौर कभी न करावे और नगारा सेना को सेना में आगे रखने की अपेक्षा पीछे को रक्खे। प्रताप सिंह जी ने स्वयं इन नियमों का वर्त्ताव पूरा २ रक्खा और "टाड साहब" लिखते हैं कि यद्यपि अब उद-यपुर के महाराणा पलङ्ग पर पोढते हैं और सोने चांदी के पात्रों में भोजन करते

देता ? इस के उत्तर में प्रतापसिंह ने कहा कि "हमारे प्राण घोर दुःख सहते हुए भी यह सुनने की आशा से नहीं निकलते कि कोई तो कहता कि "राजस्थान तुरकों के आधीन न होने पावैगा!" फिर कुटी को लक्ष कर के कहा-संभव है कि "इस कुटी के स्थान पर बहु मूल्य मंदिर बनाया जाय पर आश्चर्य नहीं है जो इस के साथ ही हमारा वह परिश्रम भी नष्ट हो जाय जो हम ने देश की स्वाधीनता के रक्षणार्थ अंगीकार किया था यह वाक्य सुन कर सब सरदारों ने शपथ पूर्वक कहा कि जब तक मेवाड़ स्वाधीन न हो जायगा तब तक एक भी महल्ल हम लोग भी न बनावैंगे" इस बचन से महाराना को धैर्य हुवा और बुझते हुए दीपक की भांति उन का मुख मंडल फिर क्षण भर के लिए प्रकाशित हो उठा "मेवाड़ अपनी स्वाधीनता की रक्षा करेगा" यह श्रवण कर के वे शांत भाव से अमरलोक को प्रस्थान कर गए।

इस प्रकार १५९७ ई० में स्वदेश वत्सल महारानार प्रताप सिंह ने परम धाम की यात्रा की। मेवार में यदि थिउकि डिडिस अथवा जेनोफन होते तो 'पेलापोनिशस का युद्ध *' अथवा 'दश सहस्र का प्रत्यावर्तन †' कभी इस राजपुत्र शिरोमणि के कार्यों की अपेक्षा अधिकतर मधुर भाव से न वर्णित होता। असामान्य वीरत्व अविचल दृढ़ता अस्रुत पूर्व उद्योग के साथ प्रताप सिंह

हैं तो भी पलङ्ग के नीचे तो चटाई रखते हैं और थाल के नीचे पत्तल और क्षौर कर्म वे भी नहीं कराते।"

* यूनान में स्पार्टा और एथिना दो नगर है। एथिना ने फारस के साथ युद्ध कर के बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी उसी स्पर्धा के मारे स्पार्टा ने भी लड़ाई का सामान किया था और एथिना से तीन बार लड़ा था वही कड़ाई "पेलापोनिसस का युद्ध" कहलाती है। प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता थिउकि डिडिस ने उन का वर्णन बड़े विस्तार से किया है।

† फारस के बादशाह दूसरे दारायुस के मरने पर उन का पुत्र अर्तक्षत्र गद्दी पर बैठा पर अर्तक्षत्र का भाई काइरस दश सहस्र ग्रीक सेना लेकर उस पर चढ़ आया। ईसा के ४०१ वर्ष पहिले काइरस युद्ध में मारा गया। और ग्रीक सेनापति जेनोफन अपनी सेना के पराक्रम और कौशल से यूनान को लौट आए यह "दशसहस्र का प्रत्यावर्तन" कहलाता है। इस के सेनापति औ इतिहास-लेखक जेनोफन ने इस का वर्णन बहुत स्पष्ट रीति से किया है।

ने बहुत काल तक महा पराक्रमी, उन्नतिचिंतक, सहाय सम्पन्न बादशाह से वैर बिसाहा था। जिस के कारण आज तक वे प्रत्येक राजपुत्र के मनो मंदिर में देवता की भांति विराजमान हैं। जब तक राजपूतों के हृदय में देश भक्ति रहेगी तब तक प्रताप सिंह देवता ही के सदृश आदृत रहेंगे।

प्रताप सिंह ने शत्रुओं से मातृभूमि को रक्षित रखने के निमित्त जितने बड़े २ काम किए हैं वह सब चिरकाल तक राजपूताना के इतिहास में सोने के अक्षरों से लिखे रहेंगे। सैकड़ों वर्ष बीत गए पर राजस्थानवासियों को आज तक प्रताप सिंह का चरित्र मोहित कर रहा है। उसका वर्णन करने के समय क्षत्रियों का हृदय हुलस उठता है। नाड़ियों में रक्तप्रबल वेग से चलने लगता है और नेत्रों के जल से गण्डस्थल भींग जाता है। वास्तव में प्रताप सिंह की कार्य परम्परा मेवाड़ के अद्वितीय गौरव और महत्व का विषय है। किसी पुरुष ने राजवंश में जन्म ले के और राज्याधिकार पाके प्रताप सिंह के समान दुःख नहीं उठाया। किसी ने देश हित की उमंग में स्वाधीनता रक्षणार्थ वन २ पर्वत २ में फिर कर प्रताप सिंह के सदृश क्लेश नहीं सहन किया। आरावली पहाड़ की सभी कंदरा, उपत्यका उनके गौरव का स्मरण दिलाती हैं। और सदा उन की महिमा प्रकाश करती रहेंगी, उन के यश का स्तंभ महासागर के समस्त जल से भी नहीं डूब सकता न हिमालय के बड़े से बड़े शिखर के नीचे दब कर चूर्ण हो सकता है।

आत्मत्याग।

हम धीरे२ मिवार के वीर पुरुष और वीरनारियों की तेजस्विता का ज्वलंत दृष्टांत प्रकाशित करेंगे। जगत के इतिहासों में ऐसे दृष्टांत बहुतही थोड़े मिलते हैं। यदि इतिहास पर दृष्टि करके पूछा जाय कि पृथिवी पर किस जाति ने सैकड़ों वर्ष तक अत्याचार और अविचार सहते रहने पर भी अपनी सभ्यता की अक्षत तथा जातीय गौरव को अचल रक्खा है? तो निस्संदेह यही उत्तर मिलेगा कि वह जाति मेवार के राजपुत्रों की है! युद्ध पर युद्ध करने के कारण मेवाड़ हत-सर्वस्व, हतवीर होजाय तलवार पर तलवार लगने के कारण राजपुत्र का शरीर क्षतविक्षत होजाय विजेता पर विजेता आ आ कर अपनी संहारिणी शक्ति का परिचय दें पर मेवाड़ कभी चिरकाल तक अवनत नहीं रहता। मानव जातिके इतिहास में केवल मेवाड़ के राजपूतही विविधि अत्याचार और दुराचार सहने पर भी विजेताओं के सन्मुख आधीन नहीं हुए तथा विजेताओं से हिल मिल

बार अपने जातीय गौरव की तिलांजलि नहीं दी। रोमवालों ने ब्रिटेनवालों पर आधिपत्य जमाया तो ब्रिटेनवाले एक साथ अपने विजेताओं से मिल गए और अपने पवित्र वृत्त का सन्मान अपनी पवित्र वेदी की मर्यादा तथा अपने पुरोहित ड्रुइड लोगों की प्रधानता खो बैठे पर राजपूतों ने कभी ऐसा रूपान्तर नहीं स्वीकार किया। वह अपने धन धरती को अनेक बार गंवा बैठे पर अपने पवित्र धर्म तथा आचार व्यवहार से विच्युत कभी नहीं हुए। उन के कई एक राज्य दूसरों के हाथ जा पड़े अनेक वंश अनंत काल सागर में निमज्जित हो गए पर उन्होंने कभी अपने धर्म को जलांजली नहीं दी। इस वीरभूमि ने बहुत दिन तक बड़े २ घोर दुःख सहे हैं तथापि बचाव के लिए आत्मसन्मान को नष्ट नहीं किया। मेवाड़ के वीर पुरुष घोरतर युद्ध में अग्रसर हुए हैं पर स्वतंत्रता की रक्षा में उदासीनता नहीं दिखाई। मेवाड़ की वीरनारि रणभूमिमें कट मर गई हैं पर विजेता की आधीन नहीं हुईं मेवाड़ के वीर बालक जन्मभूमि के लिए युद्ध भूमि में अनंत निद्रा के वशवर्त्ती हो गए हैं पर स्वाधीनता से विमुख नहीं हुए। मेवाड़ की वीरधात्री ने प्राणप्रिय पुत्र को निठुर घातक के हाथ असिमुख में सौंप दिया है पर प्रभु के वंश की रक्षा करने से मुख नहीं मोड़ा। मेवाड़ के अधिपति ने अपने हृदय रंजन पुत्र के संहर्ता को पुरस्कार दिया है न्याय के पवित्र राज्य में पाप की कालिमा नहीं लगने दी। मेवाड़के कुल पुरोहित ने राजवंश के मंगल साधनार्थ प्रसन्नता सहित अपने प्राण दे दिए हैं अपने महत उद्देश्य की पूर्त्ति से पराङ्मुख नहीं हुए। जिस बात का जीवित उदाहरण कोई देश नहीं दिखा सकता उसे जगत के इतिहास में मेवाड़ राज्य ने दिखा दिया है।

कुलपुरोहित के अपूर्व आत्मगौरव का वृत्तांत अनिर्वचनीय महत्व से पूर्ण है। यदि संसार में निस्वार्थ परता कोई वस्तु है तो उस की जीवंत मूर्त्ति यह पुरोहित जी होगए हैं यदि उदारता और महानुभावता का कोई आश्रयस्थान है तो इन्हीं महोदय का हृदय। सच तो यह है कि मेवाड़ निस्संदेह आत्मत्याग की विहारस्थली है। धरती का और कोई खंड इस गुण में राजस्थान की समता नहीं कर सकता। अपने प्राण देकर दूसरे की रक्षा करना निश्चय अलौकिक कार्य है उसे पूर्ण कर के पुरोहित महाशय अचल कीर्त्ति स्थापित कर गए हैं। इस नाशमान जगत में इस बिजली से चंचल जीवलोक में इन दान वीर पुरोहित जी की तुलना किसी के साथ नहीं हो सकती।

सोलहवीं शताब्दी के अंतिम भाग में एक बार दो क्षत्रिय युवक मृगया में जी बहला रहे थे, दोनों युवक की आकृति प्रायः एकसी थी। दोनों के अंग २ से वीरता प्रगट होती थी शरीर सुडौल फुरतीले और तेजवान थे सुख पर शोभा बरस रही थी पहिले दोनों में बड़ी प्रीति थी, दोनों ने बहुत दिनों तक प्रीतपूर्वक सुख अनुभव किया था किन्तु मेवाड़ की मृगयाभूमि में दोनों में एकाएक अन्तर होगया और प्रीति के स्थान दोनों में परस्पर प्रतिद्वंदिता उत्पन्न होगई थी यह दोनों युवक वीर महाराना उदय सिंह के पुत्र थे। एक का नाम प्रताप सिंह था दूसरे का शक्त सिंह। एक ने अतुलवीरत्व दिखा के तथा चिरकाल तक स्वाधीनता की उपासना कर के पवित्र कीर्ति लाभ की है और दूसरे ने द्वेषबुद्धि वशतः स्वदेशियों की हत्या ली है यदि एक को जातीय गौरव की ज्वलंत मूर्ति कहें तो दूसरे को जाति का कलंक कह सकते हैं। आज इन दोनों तेजस्वी भाइयों में विरोध खड़ा होगया। यदि दोनों में मेल होता तो मेवाड़ के महत्त्व का गौरव सूर्य अधिकतर प्रकाशित होसकताथा पर हाय वैमनस्य ने दोनों का बल व्यर्थ कर दिया।

प्रताप सिंह महाराना के ज्येष्ठ कुमार थे इस से गद्दी उन्हीं को मिली थी और शक्त सिंह उन के आश्रय में रहते थे। तेजस्विता और कठोरता में यह भी किसी प्रकार न्यून न थे। एक बार एक तलवार बन कर आई थी उस की धार की परीक्षा के लिए कई एक मोटे सूत एकत्रित करके काटने का प्रस्ताव किया गया था वहां शक्त सिंह भी उपस्थित थे उन्होंने गंभीर भाव से कहा था "जो तलवार हाड़ मास काटेगी उस की परीक्षा सूत पर करना उचित नहीं है" यह कह कर गंभीरता पूर्वक अपनी उंगली पर आघात कर दिया था जिस से बहुतसा रक्त निकला था। उस समय इन की अवस्था पांच वर्ष की थी। जो व्यक्ति इतनी छोटी वयस में ऐसा साहस दिखावे उस का वयोवृद्धि के समय अधिक साहसी और तेजस्वी होना सम्भव है पर जेठे भाई के साथ इन्हें इतना द्वेष होगया था कि दूर होना सहज न था, प्रताप सिंह भी इन पर क्रुद्ध ही रहते थे। कुछ ही दिन में यह क्रोध और द्वेष ऐसा बढ़गया कि पूर्व सद्भाव और प्रीति ने आकर दोनों को एकता के सूत्र में नहींबांध सकी। वरन परस्पर का क्रोध बढ़ते २ यहां तक बढ़ गया कि दोनों एक दूसरे के लहू के प्यासे हो गए। एक बार प्रताप सिंह चक्राकार अस्त्रक्रीड़ा के स्थल पर घोड़ा फेर रहे थे तीक्ष्ण धार का भाला हाथ में था इतने में शक्त सिंह

भी आ गए उन से प्रताप सिंह ने गंभीर भाव से कहा "आओ आज यहीं पर निपट लें, देखें भाला चलाने में किसे कितनी सामर्थ्य है"। शक्त सिंह ने भी उत्तर दिया "सो सहो वन्द कौन है" दोनों में द्वंदयुद्ध का ठान ठन गया मेवाड़ की आशा भरोसा रूप तेजस्वी दोनों वीरका जीवन आज संशय पर चढ़गया कि उसी अवसर पर वहां एक मधुर मूर्ति धारी तेजस्वी पुरुष आकर उपस्थित हो गए और धीरता पूर्वक दोनों भ्राताओं के बीच में खड़े हो गए यह महोदय राजस्थान के पवित्र कुल के मंगल विधायक देवता थे पवित्र वंश पुरोहित दोनों भाइयों का युद्ध निवारण करने में प्रवृत्त हो गए। दोनों के जीवन की रक्षा के उद्देश्य से धीर गंभीर स्वर से बोले "यह क्रीड़ाभूमि है, युद्धभूमि नहीं है और भाई २ में युद्ध होना वास्तविक क्षत्रियों का धर्म नहीं है लड़ाई बंद करो तुम्हारे भाले वैरियों के हृदय में प्रविष्ट हों तथा यह घोड़े शत्रु-शोणित की सरिता में तैरने के योग्य हैं। वंश की मर्यादा मत नष्ट करो, महापुरुष बाप्पाराव के पवित्र कुल को कलुषित न करो देखो! भाई के रक्त से भाई के शस्त्र की पवित्रता नष्ट करना उचित नहीं है"! पर पुरोहित जी के इस वाक्य से कुछ फल न निकला। दोनों वीर परस्पर प्राणसंहार से विमुख न हुए। दोनों के बरछे चमकने लगे। यह देखकर पवित्र स्वभाव पुरोहित महाशय क्षण काल तक कुछ चिंता करते रहे कुछ बोले नहीं। फिर कटार निकाल कर अपना वक्षस्थल विद्ध कर लिया रक्त प्रवाहित होने लगा। मेवाड़ के मंगल विधात्री कुलदेव ने युद्धोन्मुख भ्रातृ युगल को प्राणरक्षा के हेतु अकातर भाव से अम्लान वदन से अपना जीवन विसर्जन कर दिया।

प्रताप और शक्त यह देख कर स्तम्भित हो गए दोनों के शरीर अवश और हाथ शिथिल हो गए पुरोहित जी का मृतक देह उन के मध्य में पड़ा था, उन का शोणित दोनों के शरीर में स्पर्श हुआ था। उसे देख कर प्रताप सिंह मर्मपीड़ा से कातर हो गए फिर छोटे भाई पर शस्त्र नहीं चलाया। महान आत्मत्याग का महान उद्देश्य साधित हुवा। प्रताप सिंह ने हाथ उठा कर कनिष्ट भ्राता से राज्य छोड़ कर निकलजाने को कहा शक्त मिवार त्याग कर यवन सम्राट अकबर से जा मिले और भ्रातृवध का अवसर देखनेलगे इन भाइयों में पुनर्वार प्रीति स्थापित हुई थी मेवाड़ के धर्मापली में हलदीघाट के गिरिसंकट में प्रातस्मरणीय पुण्यपुंजमय महातीर्थ में शक्त सिंह ने ज्येष्ठबन्धु का असामान्य साहस, जन्मभूमि की स्वाधीनता के

अर्थ लोकातीत पराक्रम देख कर मुग्ध होगए थे। युद्ध की समाप्ति में प्रताप सिंह के चरणों पर मस्तक रख कर क्षमा की प्रार्थना की थी फिर दोनों ने प्रेमपूर्वक दोनों का आलिंगन किया था।

वीरबाला।

चौदहवीं शताब्दी बीत गई है पंद्रहवां शतक अनंत काल की परिवर्तन शीलता दिखाने के लिए उपस्थित हुआ है। पराधीन पर पीड़ित भारतवर्ष दुरंत तिमिरलिंग के आक्रमण से महाश्मशान हो रहा है। दिल्लीपति मुहम्मद तुगलक जीते हुए मृतक के समान इसी प्रेतभूमि के एक कोने में पड़ा है। उस की सब सामर्थ्य नष्ट हो गई है। राजधानी दिल्ली निठुर आक्रमणकर्ता के घोर अत्याचार से श्रीभ्रष्ट होकर शोक, दुःख, दरिद्र का हृदयविदारक दृश्य दिखलारही है। भारत की इस दुर्दशा के समय में भी वीरभूमि राजस्थान अपने प्राचीन वीरत्व के गौरव से उदभासित है राजपुताने की वीरबाला ने अपने असाधारण तेज का प्रकाश कर के पति के उद्देश्य की पूर्ति के अर्थ प्राण विसर्जन किया था। वीरभूमि की इस तेजस्विनी रमणीरत्न का नाम कर्म देवी था।

राजस्थान में एक यशलमीर नामक बस्ती है। वह मरुभूमि के मध्यभाग में बसी हुई है जिस के चारों ओर विशाल बालुका सागर भीषण भाव से परिपूर्ण हो कर पथिकों के हृदय में भय उत्पादन करता है। प्रकृति का भयंकर राज्य यशलमीर तरुलताओं के द्वारा शोभायमान है। पंचदश शताब्दी के प्रारंभ में उस राज्य के अन्तर्गत पूगल नामक भूभाग में अनंगदेव आधिपत्य करते थे उन के पुत्र का नाम साधू था। भट्टि जाति में साधू के समान वीर पुरुष कोई न था उन के साहस, सामर्थ्य एवं वीरत्व के आगे सभी माथा झुकाते थे। उन का आतंक मारवार से लेकर सिंधु नदी के तट तक छाया हुवा था। डर के मारे आसपास के राज्यों में कोई भी शिर न उठाता था। इस प्रकार भीषण मरुभूमि में पूगल राजकुमार ने अपने असीम प्रताप और अचल साहस के साथ अपना अधिकार स्थिर रक्खा था।

वह एक बार किसी युद्धस्थल से विजयी हो कर लौटे आ रहे थे मध्य में बहुत से ऊंट घोड़े और योद्धाओं समेत अरिंत नगर में आकर उतरे वह महिलवंशीय मानिकराव की राजधानी थी जो १४४० ग्रामों पर प्रभुत्व करते थे। उन्हों ने बड़े आदर से पूगलकुमार साधू का निमंत्रण किया यह भी

प्रसन्नता पूर्वक उन के प्रतिथि हुए इस अवसर पर इन के वीरत्व की महिमा ने और भी प्रकाश पाया सौंदर्यलीलामयी उद्यानलता ने दृढ़तम वनवृक्ष का आश्रय लेना चाहा भट्टिलराज माणिकराव की दुहिता कर्मदेवी पूगलराज्यकुमार के गुणों पर मोहित हो गई। इधर राठौर वंशीय मंदोर के राजकुमार अरण्यकमल से इसी कन्या का विवाह ठहर चुका था पर मानिकनन्दिनी उस सम्बन्ध से प्रसन्न न थीं। उन्होंने साधु के साहस की कथा सुन रक्खी थी और इस समय वीरत्व का अधिक परिचय पाया अतः उक्त वीरपुत्री ने अरण्य कमल को अतिक्रम कर के मरुभूमिविहारीपुरुष सिंह की धर्मपत्नी कहलाना ही उत्तम समझा।

साधु ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया अरण्यकमल के भय से हृदय को विचलित नहीं किया। अपने बल और साहस के भरोसे पर उस कामिनी के ग्रहण करने की इच्छा प्रकाश कर दी। समय पर व्याह का दिन भी नियत हो गया और मानिक राव ने अपनी राजधानी अरिंत नगर में कन्यारत्न साधु महोदय को समर्पित कर दिया। वाटिका की नवलतिका ने अरण्य तरुवर का आश्रय लाभ किया।

इस विवाह से अरण्यकमल का हृदय व्यथित हो उठा उस की आशा जाती रही जिस मनोरथ में वह आनंदित हो रहा था उस का अभाव हो गया। और प्रतिहिंसा के लिए चित्त उत्तेजित होने लगा इस से प्रण कर लिया कि मरने मारने में कभी त्रुटि न करेंगे। प्रतिज्ञा कियी कि जबतक क्षत्रियशोणित का शेष बिन्दु नस में रहेगा तब तक प्रतिद्वन्द्वी साधू को विजय करने से न छोड़ूंगा। विधि की अपूर्व सृष्टि है। अपूर्ण-विकसित कामिनी कुसुम के लाभ से वंचित होने से अरण्यकमल के हताश हृदय में इस प्रकार कालीमय होगया था दृढ़ प्रतिज्ञा और दृढ़ संकल्प ने उसको ऐसे भयङ्कर व्रत के साधन में उत्तेजि कर दिया था। इस रीति से पूगलकुमार का सुखमय मार्ग कंटकित हो गया।

अरिंतराज ने जामाता को यौतुक में बहुमूल्य मणि मुक्ता स्वर्ण रौप्य और एक सुवर्णमय वृषभ तथा तेरह कुमारी देकर प्रेमपूर्वक विदा किया। और चार सहस्र सेना भी संग में भेजनी चाही थी पर साधु ने केवल सात सौ महायोद्धाओं के दल एवं निज बाहुबल पर निर्भर कर के अर्धांगवासिनी सहित प्रस्थान कर दिया तौ भी मानिक राव के अधिक अनुरोध से पचास रोहिल

बीर लेने ही पड़े। इन योद्धाओं के अधिपति कर्मदेवी के भाई मेघराज हुएथे।

सभों ने अरिंत नगर से याता की सब के सब एक ही उत्सव और आनन्द स्रोत में मग्न कर पूगल नगरी की ओर अग्रसर हुए। रास्ते में जिस समय साधु चन्दन नामक स्थान में विश्राम लेने लगे उसी समय दूर पर मारवाड़ की सेना के आने के लक्षण दिखाई दिए और देखते ही देखते सेना भी सामने आपहुंची। साहसी साधु ने देखा कि बहुसंख्यक सेना हमारी ओर आरही है। अरण्यकमल महाआक्रोश से तलवार घुमाकर सेना को चला रहा है। ऐसा देखते ही युद्ध के लिए प्रस्तुत हो कर धीरतापूर्वक अपने दल को भी आत्मविसर्जन अथवा विजयलक्ष्मी की अधिकारवृद्धि के लिए सनद्धहोने को कहा। राठौरों की ओर चार सहस्र योधा हैं तेजस्वी अरण्य-कमल अपने प्रतिद्वन्द्वी के शोणित में तर्पण करने के लिए संकल्प कर चुका है पर वीरवर साधु ने कुछ चिंता न मानी। धीरता को सीमा लांघ कुछ भी बालचापल्य का परिचय नहीं दिया, वीरत्वाभिमानी वीर युवक वीरधर्म की सम्मान रक्षाकरने में उद्यत हुआ। देखते २ चार सहस्र राठौर सेना मद विक्रम से भट्टी सेना पर पहुंच गई। साहसी राठौरें संख्या में अधिक थे पर उन सबों ने एक साथ हो समस्त सेना से आक्रमण नहीं किया। इस प्रकार लड़ना उन्हें भी न रुचता था इस से पहिले एक २ योद्धा के साथ युद्ध का आरम्भ किया। राजस्थान के मरुप्रांत वर्त्ती चन्दन नामक स्थान में लावण्यवती राजपूतरमणी के लिए १४०७ ई० में यह लड़ाई हुईथी। योधाओं के द्वंद युद्ध के उपरांत साधु ने बहुत से विपक्षियों का संहार करतेहुए दो वार वैरी वरुथ में प्रवेश किया। इस असमय की लड़ाई भिड़ाई से कर्मदेवी न चिंतित हुई न घबराई। उस के सुख दुःख के अद्वितीय अवलंब प्राणाधिक स्वामी अनेक शत्रु से घिर जाने और प्राणेश्वर का जीवन संशय में पड़जाने से वे भय विह्वला नहीं हुई। वरंच पति को साहस देने लगीं। और उन की अद्भुत समर चातुरी के लिए मनहीमन धन्यवाद करने लगी। साधु ने छः सौ शत्रुओं को धराशायी किया और अनुमान आधी सेना इन की भी कटगई। तथापि कर्म देवी अधीर नहीं हुई स्वामी से कहने लगीं "हम तुम्हारा युद्ध कौतुक देखेंगी, और तुम मारे जाओगे तो भी साथ

चलेंगी" साधु इस सुकुमारी की तेजस्विता देख कर बड़े प्रसन्न हुए और अपरिसीम प्रीति की स्नेह दृष्टि से रमणी की उस तेजस्विता का सम्मान कर के राजकुमार को युद्ध के लिए आह्वान किया वह भी चाहता था कि उसी समय राठौर लड़ाई शीघ्र समाप्त होजाय। अब प्रतिद्वंदी के शोणित में अपने असम्मान का चिन्ह धोने के लिए उसी समय साधु के सन्मुख आया। इस पवित्र युद्ध में छल का आवेश नहीं, चातुरी का मलिन भाव नहीं, अधर्म की छाया नहीं, दोनों क्षत्रियुवक ने अपनी २ प्रधानता और मर्यादा की रक्षा के लिए शीलता से कुछ काल संभाषण कर के तलवार उठाई। अग्नि की चिनगारियां तलवारों से निकलने लगीं। साधु ने अरण्य कुसुम के स्कन्ध पर खड्ग प्रहार किया। प्रतिद्वंदी ने भी शीघ्रता के साथ इन के मस्तक पर असि चालन किया। कर्मदेवी ने देखा कि जीवितेश्वर के माथे पर तलवार लगी और दोनों वीर धरती पर गिर पड़े। कुछ काल बीतने पर राठौरनंदन को तो कुछ चेतना हुई किन्तु साधु नहीं उठे। तेजस्वीकुमार वीरत्व की सन्मान रक्षा के लिए आनंदपूर्वक स्वर्ग को सिधार गए। कर्मदेवी की समस्त आशा का अंत हो गया जिस मनोरथ की उमंग में उन्होंने पितृकुल परित्याग किया था वह एक साथ समाप्त हो गया। राजकन्या का जीवन सर्वस्वमरुभूमि के प्रान्त में लुट गया। पर कर्मदेवी इतने पर भी कातर नहीं हुई। धीरभाव से तलवार खींचली और उस से अपनी एक भुजा काट कर कहा। यह बांह प्राननाथ के पिता को देकर कहना कि 'उन' के लड़के की वहू ऐसी ही थी—और दूसरी बाहु काट डालने की आज्ञा की वह आदेश मान लिया गया। राजकुमारी ने वह भुजा विवाह के विभूषणों से भूषित कर के महिल कवि को अर्पित करने के लिए कहा। अनंतर युद्धस्थल में चिता रची गई श्री पतिप्राणा पति का मृतक शरीर अंक में धारण करके चिता पर बैठ कर पतिलोक को पधारीं।

कर्मदेवी की छिन्न भुजा पूगल में पहुंची। वृद्ध महाराज ने उसे अग्नि देव को समर्पित करने की अनुमति दी। दाहस्थान में एक पुष्करिणी खोदी गई जो "कर्मदेवी का सरोवर" इस नाम से प्रसिद्ध हुई। अरण्यकमल का घाव आच्छान हुआ, छही महीने में वह भी वीर साधु का अनुगामी हुआ।

समाप्त पुस्तकम्

परिशिष्ट।

लाला मारकंडेय लाल (चिरजीव कवि) कृत महाराणा प्रताप सिंह को प्रशंसासूचक कविता—

हल्दीघाट हार की खुमार अजहूं ना गई भई सोई कीच सबही को दुखदाई है। बरसा असो नित मलीन युद्ध म्लेच्छन के अधिक अनर्थ विद्युपात समुदाई है॥ दीयर दुनी में बड़े भाग चिरजीव भाये फिरयो कालचक्र भई कालिका सहाई है। पावस नवाब शाहबाज पै उम्रड़ आज सरत प्रताप सिंह राणा की चढ़ाई है॥१॥

गने कौन सेना राजपूत औ म्लेच्छन की सकल रणांगन सुभट्टन ते मढ़िगो। घोड़े पै प्रताप मत्त गज पै सलीम देखे वीरन लड़त लोभ प्रानन को कढ़िगो॥ कवि चिरजीव हल्दी घाट को हुमाहुम में दोऊ मदमत्त एक एकन पै बढ़िगो। राणा रण मव्वर उठाय अस्त्र जब्बर सुबब्बर लौं सुअनअकब्बर पै चढ़िगो॥२॥

बिन जाने प्रान जिन मानुष शरीर हूं पै, जाको उपकार सो कछू ना असकति है। राम की रियासत उदंडताई आर्जुन की जाके धमनीन में सदाही मसकति है॥ कवि चिरजीव जाके अदनो बहादुरी पै, सारे बादशाहन की छाती सरकति है। हायरे! हमारे रजपूत की बड़ाई जौन, जमनहियान में घनोहूं कसकति है॥ ३॥

छप्पय—जो हिन्दुन को धर्म भूमि पै अटल निवाह्यो।
जो सर्वसहू तजे जमनदासत्व न चाह्यो॥
जो गो द्विज गन हेतु हृदय को रुधिर निवाह्यो।
जो शत्रुन सो लड़त पाय पीछे नहिं टार्‌यो॥
चिरजीव अकब्बर दरप जो दमन कियो बाइस बरिस।
राणा प्रताप तेहि सुयश को को न सुने हरियश सरिस॥ ४॥

सूचना।

जब मनुष्य देखता है कि अमुक वस्तु लाभकारी है तो उस की प्राप्ति का उपाय करता है। जब मनुष्य देखता है कि अमुक व्यक्ति इस प्रकार उन्नति कर रहा है तो सोचता है कि मैं भी करूं। जब सुनता है कि अमुक व्यक्ति ने इस उपाय से विद्या आदि सद्गुणों की प्राप्ति की थी जिस के कारण उस का नाम चिरस्थाई हुआ है तो उसके सुनने से उस का भी चित्त उस ओर आकर्षित होता है। तात्पर्य यह कि मनुष्य की यथार्थ उन्नति के लिये इतिहास और जीवनचरित्र का पढ़ना अति आवश्यक है। इसी लिये मैंने सज्जन और आदर्श पुरुषों के उपदेशमय जीवन चरित्रों का प्रकाश करना आरम्भ किया है। और निम्नलिखित जीवन चरित्र छप कर प्रस्तुत हैं—